SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:54, Issue: 08
JANUARY-2024, Price Rs.20/-
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

जनवरी-2024

रु.20/-

विना वेंकटेशं न नाथो न नाथः, सदा वेंकटेशं स्मरामि स्मरामि।
हरे! वेंकटेश! प्रसीद प्रसीद, प्रियं वेंकटेश! प्रयच्छ प्रयच्छ।।

दि. 10-11-2023 से दि. 18-11-2023 तक तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव के अवसर पर देवी माँ विविध वाहनों पर आरूढ़ होकर भक्तों को दर्शन दिया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. के श्रीश्रीश्री पेद्द(बडा) जीयर, श्रीश्रीश्री चिन्न(छोटा) जीयर, ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष, ति.ति.दे. के ई.ओ., ति.ति.दे. के दोनों संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारीगण के साथ अन्य अधिकारीगण ने भाग लिया। कलाकार बृंद भी माडावीथियों में अपना नृत्यों को प्रदर्शन किया।

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-१०)

हे भरतवंशी धृतराष्ट्र! अन्तर्यामी श्रीकृष्ण महाराज दोनों सेनाओं के बीच में शोक करते हुए उस अर्जुन को हँसते हुए से ये वचन बोले।

नित्यात्मुडैयुंडि नित्युडै वेलुगोंदु
सत्यात्मुडैयुंडि सत्यमै तानुंडु
प्रत्यक्षमैयुंडि ब्रह्ममैयुंडु सं
स्तुत्युडे तिरुवेंकटाद्रि विभुडु ॥नित्यात्मुडै॥

ये मूर्ति लोकंबुलेल्ल नेलेडु नात
डेमूर्ति मोक्षमिय्यजालेडु नात
डेमूर्ति लोकैक हितुडु
ये मूर्ति निजमूर्ति येमूर्तियुनु गाडु
येमूर्ति त्रिमूर्तुलेकमैन यात
डेमूर्ति सर्वात्मुडेमूर्ति परमात्मु
डामूर्ति तिरुवेंकटाद्रि विभुडु ॥नित्यात्मुडै॥

ये देवु देहमुन निन्नियुनु जन्मिंचे
ने देवु देहमुनु निन्नियुनु नणगे मरि
ये देवु विग्रहंबी सकलमिंतयुनु
ये देवु नेत्रंबु लिनचंद्रुलु
ये देवुडी जीवुलन्निंटिलोनुंडु
नेदेवु चैतन्यमिन्निटिकि नाधार
मेदेवुडव्यक्तु डेदेवु डद्वंद्वु
डा देवुडे वेंकटाद्रि विभुडु ॥नित्यात्मुडै॥

ये वेल्पु पादयुगमी भूमियु नाकाशंबु
ये वेल्पु पादाक्रांतंबनंतंबु
ये वेल्पु निश्वासमी महामारुतमु
ये वेल्पु निजदासुली पुण्युलु
ये वेल्पु सर्वेशु डेवेल्पु परमेशु
डे वेल्पु भुवनैक हित मनोभावुकुडु
ये वेल्पु कडु सूक्ष्ममे वेल्पुकडु धनमु
आवेल्पु तिरुवेंकटाद्रि विभुडु ॥नित्यात्मुडै॥

कठोपनिषत् में कथित नित्यत्व, तैत्तरीयोपनिषत् में चर्चित सत्यत्व को 'ईश्वरत्व' के साथ जोडते हुए कहा गया है कि वह ईश्वर, स्वयं श्री वेंकटेश्वर ही हैं। परमात्मा के सर्वनायकत्व, मोक्षप्रदत्व, व्यक्ताव्यक्तत्व, साकार-निराकारत्व, त्रिमूर्तिमत्व, सर्वात्मकत्व तथा परमात्म तत्त्व इन सभी तत्त्वों का, श्री वेंकटेश में ही दर्शन करते हैं। परमात्मा के नेत्रों में सूर्य-चंद्र (मुंडकोपनिषत्) हैं। चेतनता के रूप में सकल जीव-राशि के लिए वे आधार-भूत हैं। (कठोपनिषत्) 'भगवद्गीता' के अनुसार, स्वामी अव्यक्त तथा अद्वन्द्व भी हैं। परमात्मा के चरण-भूमि है तथा केश हैं - आकाश। इस तरह वे आदि-अंत रहित भी हैं। पवन, उनका उच्छ्वास-निश्वास हैं। पुण्य कर्मों का आचरण करनेवाले सभी उनके दास हैं। सर्वेश, परमेश, भुवनैक हित की कांक्षा करनेवाले-श्री वेंकटेश 'अणोरणीयान-महतोमहीयान' ही हैं।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

श्री वेंकटेश्वर अन्नप्रसाद ट्रस्ट

तिरुमल, तिरुचानूर में हजारों की संख्या में भक्तों को प्रतिदिन अन्नप्रसाद वितरण होने की बात भक्तों को विदित ही है। अब ति.ति.दे अन्नप्रसाद ट्रस्ट ने भक्तों, दाताओं को दान देने का और खूना अक्सर देना चाहता है। इसलिए एक दिन दान की योजना प्रवेश कर रहा है।

एक रोजाना खर्च -

1. एक दिन - 38 लाख
2. अल्पाहार - 8 लाख
3. मध्याह्न भोजन - 15 लाख
4. रात्रि भोजन - 15 लाख

इस नकद को दाताओं से संग्रहित करने के लिए सिद्ध हो रहा है। तिरुमल तिरुपति देवस्थानों का अन्नदान ट्रस्ट दाताओं - व्यक्तियों/कंपनियों/संस्थाओं/ट्रस्टों/संयुक्त ढंग की व्यवस्था हो सकती है। ये रोजवारी नकद कुल 25 लाख या अल्पाहार - 5 लाख, दोपहर का भोजन - 10 लाख या रात्रि भोजन - 10 लाख प्रदान कर सकते हैं। दाताओं को ति.ति.देवस्थान के द्वारा आयोजित सुविधाएँ एक रीत होंगी। अपने मर्जी के अनुसार सूचित एक दिन पर अन्नदान कर सकती है। और दाता का नाम भी अन्नदान केंद्र में डिस्प्ले होता है।

अन्य विवरण के लिए संपर्क करें -
उप कार्यकारी अधिकारी (डोनार सेल) FAC.,
ति.ति.दे., तिरुमल।
(cdmc.ttd@tirumala.org / www.tirumala.org वेबसाइट में भी दरसा सकेंगे)
दूरभाषा - 0877-2263001 & 0877-2263472.

(सूचना - उपर्युक्त विषयों पर परिवर्तन होनी की संभावना है।)

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-54 जनवरी-2024 अंक-08

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

विषयसूची

तेलुगु लोगों का बड़ा त्यौहार	श्री भूमन करुणाकर रेड्डी	07
मकर संक्रांति	डॉ.एस.हरि	09
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	13
रामो विग्रहवान धर्मः	प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	16
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	20
गीतामाधुरी	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	23
देवहूति	डॉ.के.एम.भवानी	25
परशुराम	डॉ.जी.सुजाता	31
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	37
इजिप्त देश की वैदिक गुणक विधि	डॉ.वड्डी जगदीश	38
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	40
काली मिर्च के स्वास्थ्य लाभ (मरीच)	डॉ.सुमा जोषि	44
जनवरी महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - यही है कर्म फल	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - धनुर्मास का सांप्रदायिक महापर्व	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 18		52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - उभयदेवेरियों सहित श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री गोदादेवी के अलंकार में श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

संपादकीय

मकर संक्रमण का पुण्य पर्व

संक्रमण माने सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है। कहा जाता है कि मकर संक्रांति के दिन सूर्य का प्रवेश मकर राशि में होता है। सूर्य मकर राशि प्रवेश से ही उत्तरायण पुण्य काल प्रारंभ होता है। इसलिए इस संक्रमण को विशिष्ट स्थान है।

धार्मिक मान्यताओं से देखे तो धरती पर देवताओं के दिन प्रारंभ होता है। अंधकार का नाश होकर प्रकाश का आगमन होता है। इसलिए इस दिन किया गया दान पुण्य अन्य दिनों में किए गए दान पुण्य से अधिक फलदायी होता है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। जहाँ के पर्व, त्योहार का संबंध काफी कुछ कृषि पर निर्भर करता है। किसानों की फसलों से मनाये जाने वाले पर्व ही संक्रांति है।

भोगी, संक्रांति, कनुमा यह तीन दिनों का त्योहार बड़ा महापर्व के रूप में संपन्न करते हैं। भोगी के दिन घर के आंगन में रंगोली बनाके रंग डालते है। ताजा गोबर से गोलियाँ(उपलें) बनाके रंगोली के बीच में रखकर गौरम्मा देवी मानकर हल्दी, कुंकुम से सुसज्जित करते है। और पुरातन, खराब, टुकडी हुए लकडी से बनाये मेजा, कुर्सी आदि चीजों को आग में डालकर, उस आग में गरम की पानी बनाके नहाते है। संक्रांति के दिन नये कपडे पहन कर, उस प्रांतों के अनुसार विशेष रूप से आहार पदार्थों को बनाके भगवान जी को नैवेद्य समर्पित करते है। और साथ-साथ स्वर्गीय लोगों के याद दिलाने में नये वस्त्र समर्पित करते है। कनुमा के दिन गाय, बैल को रंग-बिरंग फूल, हल्दी, कुंकुम से सुसज्ञित कर पूजा करके कृतज्ञता को प्रकटित करते है।

नाम अलग-अलग होने पर भी सारे प्रांतों में संक्रांति त्योहार को मनाते है। गुजरात में संक्रांति के दिन पतंग उड़ाने की प्रथा है। तमिलनाडु में पोंगल, आंध्र, तेलंगाना, कर्नाटक और केरला में संक्रांति, राजस्थान, बिहार, झारखंड प्रातों में सकरात, उत्तराखंड में खिचडी संक्रांति के नाम से जाना जाता है। उत्तर प्रदेश, पंजाब, उडिशा, महाराष्ट्र में भी विशेष रूप से संक्रांति त्योहार को मनाते है।

संक्रमण के समय किये गये जप, तप, दान, स्नान, श्राद्ध, तर्पण आदि धार्मिक क्रियाकलापों का विशेष पुण्य फलदायक है। मकर संक्रांति के दिन तिल का बहुत महत्व है। कहते हैं कि तिल मिश्रित जल से स्नान, तिल के तेल द्वारा शरीर में मालिश, तिल से ही यज्ञ में आहुति, तिल मिश्रित जल का पान, तिल का भोजन इनके प्रयोग से मकर संक्रांति का पुण्य फल प्राप्त होता है और पाप नष्ठ हो जाते हैं।

इस प्रकार हमारे संस्कृति, आचार-व्यवहार, रीति-रिवाजों के अनुसार त्योहारों को विभिन्न रूपों में संपन्न करके भगवान जी का कृपा-आशीष को प्राप्त लेंगे।

तेलुगु लोगों का बड़ा त्यौहार

तेलुगु मूल : श्री भूमन करुणाकर रेड्डी
ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष

बड़ा दरवाजा का अर्थ है गोपुर प्रधान द्वार और तेलुगु लोगों के लिए बड़ा त्यौहार संक्रांति है। संक्रांति को गुडियों का त्यौहार, रंगोली का त्यौहार, फसलों का त्यौहार, मवेशियों का त्यौहार और बुजुर्गों का त्यौहार भी कहा जाता है। संपत्ति गेंद का शुभ मौसम के दौरान, सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। इसलिए देव मार्ग शुरू होने पर इस उत्तरायण पवित्र मौसम के दौरान स्नान, दान, जप और तर्पण का अभ्यास किया जाना चाहिए। एक ऐसा समय जब हर घर में स्वाभाविक रूप से डेयरी फसलें प्रचुर मात्रा में होती हैं। यह विशेष रूप से लक्ष्मी के स्वरूप पशुधन की पूजा करने का शुभ मौसम है। किसान अपने हाथ में फसल को देखकर अब तक की गई मेहनत को भूल जाता है। मवेशियों का यह त्यौहार किसानों द्वारा भगवान के प्रति कृतज्ञता के संकेत के रूप में मनाया जाता है जो भूमि को हरा-भरा बनाते हैं और बैल जो खेतों में हल चलाते हैं।

पहले हमारा गाँव नये अनाज के खलिहानों, दूध के पोंगलों और रंगोलियों से घर के आँगन भरे रहते थे। संक्रांति के दौरान युवतियाँ मायके आना एक परंपरा है। महिलाएँ अपने माथे पर कच्ची हल्दी पीसकर पहनती है, काली मिर्च के रंग की तरह दिखने वाली सिंदूर को लगाकर, बर्फ के फर्दे की तरह सुन्दर साडियाँ बाँधती है। और पौष्य लक्ष्मी कला से चमकती है।

सभी लड़कियाँ घर के सामनेवाले हिस्से को रंग-बिरंगे रंगोलियों से सजाती हैं। रंगों के बीच गोबर से बने गोब्बेम्मा(उपलें) को रखे जाते हैं। इन्हें लौकी और गेंदु के फूलों से सजाया जाता है। इनके चारों ओर युवतियाँ घूमते हुए गोब्बेम्मा गीत(स्थानीय लोरियाँ) गाती हैं। यह धरती माता की पूजा है। लड़के पतंगे उड़ाकर मजा लेते है।

सुबह होने से पहले बर्फ पर्दों के बीच में भोगी अलाव जलाने का कोलाहल शुरू हो जाता है। अलविदा कहते हुए और नए का स्वागत करते हुए, बुराइयों और दुर्भाग्य को दूर करने के लिए पुराने कपडे, पुराने सूप, झाडू जैसी चीजें अलाव में डाल दी जाती है। इससे मनुष्य के अंदर जमा हुई अशुद्धियों को दूर करने का संदेश निहित है।

शाम को पाँच साल के कम उम्र के बच्चों के सर पर भोगी फलों को डालते है, इसमें रेगुफल(बेर), उबाऊ, कच्चे चना और छोटे सिक्कों को मिलाया जाता है। बच्चों के नजर निकालकर और उनके सिर पर डाला जाता है ता कि वे ब्रह्मरन्ध्र से नीचे उतर सकें। इससे बच्चों में बुद्धि और संस्कार का विकास होता है। साथ ही बच्चों के बाल नुकसान भी हटा दिया जाता है। शादीशुदा औरतों को पान देना देवी गौरी की पूजा करने की तरह है।

संक्रांति त्यौहार का हिस्सा, कनुमा एक विशेष मवेशी त्यौहार है। खेती के लिए हमारे साथ मेहनतकरा बैलों और डेयरी फार्मिंग का आधार गायों के हल्दी और सिंदूर से सजाकर पूजा करना नंदीश्वर और कामधेनु की पूजा करना ही है। धरणी माता को प्रसन्न करने के लिए पोंगल को खेतों में छिड़काया जाता है।

कृषि प्रधान देश होने के कारण यह त्यौहारों का मौसम है जब फसलें आती है। नए अनाज आएँगे। नए चावल से प्रसाद बनाते है और देवताओं को निवेदन करते हैं। नए चावल, नेए गुड और तिल का फसलें प्राप्त का मौसम है। उनके साथ चावल पकाना और परमात्मा को निवेदन करना प्रकृति की पूजा करने की तरह है। संक्रांति से समय शेष दानों में कुष्मांड (कद्दू) दान, काले चने के पकोडे का दान अवश्य करना है। इससे पितृ देवताओं को संतुष्ट होता है।

सातानी जिय्यर संक्रांति के पूरे महीने में हरिनाम संकीर्तनों के साथ गाँवो में घूमते हैं। अम्ब पलुकु! जगदम्बा पलुकु!(माने माताजी बोलती है, जगत्‌जननी बोलती है) बुडबुक्कलु लोग(हाथ में डमरु बजाते सारे गाँव घूमनेवाले) हर घर के आँगन में शोर मचाते है, शुभ की बातें करते हुए डक्का बजाते है। गंगिरेद्दुवाले(बैलों को नचानेवाले) विभिन्न प्रकार के घुँघरुओं से, छोटी घाटियों से सजाए हुए नचाने वाले बैलों को साथ में लाते है। डूडूबसवन्न(तेलुगु में बैल का पर्यायवाची शब्द) कहते हुए रंगोलियों में खेलने का मौखा दिया जाता है। जंगम सरदार ''शंभो महादेव शिव शंकर'' कहते हुए एक बड़ी घंटी बजाते हुए - सिर पर एक मुकुट, मोटी विबूदी, पट्टियाँ और गले में एक बड़ा शंख पहनते हैं। जादूगर(जोकर) आँगन में बैठकर छोटे-छोटे रूपों में तमाशा करते है। जो रहा, न रहने की तरह, जो न रहा, रहने की तरह जादू की विद्याओं का प्रदर्शित करके गाँववालों को आनंदित कर देते हैं। भेंटों को लेते हैं। बत्तियों को जलानेवाले, तेल, कपडे पकडनेवाले, काटिकापर(स्मशान में रहनेवाला) इन संक्रांति भिखारियों में से प्रमुख है।

कोम्मदासर (पेड पर बैठकर भीख माँगने वाले) गाँव के बीच में ऊँचे पेड पर बैठ जाते है और पैसों के लिए पेड की आड़ में एक नया कपड़ा बिछाते है। दिन में वेषधारण करनेवाले विभिन्न देवताओं के रूप में भिक्षा माँगने के लिए आते हैं। तत्व गीत गानेवाले बैराग, गोसाई, कृपा पसारने वाले पकीर इस त्योहार के पूरे महीने भर दिखाई देते है। बटेर सरदार अंतहीन शेखी बघार कर और मजाक करके अच्छा मनोरंजन प्रधान करते हैं। कारीगर नए अनाज और चावल के लिए वस्तु विनिमय का व्यापार करने आते हैं। चेंचु जाति के लोग मोती, ट्यूब, मैट, ताड़ की टोकरियों का मोलभाव करने के लिए गाँवों में लाते हैं।

समय यांत्रिक हो गया है। सेलफोन और लैपटॉप समाज को बहुत प्रभावित कर रहे हैं। उनकी माया में पड़नेवाले गाँव ऐसे कई समारोहों में दूर रह रहे हैं। मनोरंजन तो बहुत है लेकिन मुर्गा दौड, भेड़ दौड, बैलों की होड़ भी बहुतायत में चल रहे हैं। फिर से हमारे ग्रामीण की प्रकृति में इससे पहले का वैभव सामने आना चाहिए। उन दिनों के सदाचार और उत्सवों को उजागर किया जाना चाहिए। मैं यही चाहता हूँ कि- उन दिनों की कलाएँ, शोर-समारोह और उत्सव, मीठी यादे बनकर न रह जाएँ।

अनुवादक : श्री सी सुधाकर रेड्डी

मकर संक्रांति

- डॉ.एस.हरि

भारत एक महान देश है। इसकी संस्कृति महान है। इसकी गौरवशाली परंपरा है। वस्तुतः भारत विविधता का देश है। यहाँ विभिन्न धर्म, जाति, भाषा और संप्रदाय के लोग रहते हैं। फिर भी भारत एक है और इसकी संस्कृति अखंड है। इसीलिए भारत में अनेकता में एकता पायी जाती है। यह भारत की सबसे बडी उपदेयता है। मिलजुलकर रहते हुए सहयोग व सद्भावपूर्ण व्यवहार करना भारतीय संस्कृति का निर्धारक तत्व है। इसी में समाज की भलाई निहित है। संस्कृति का सीधा प्रभाव त्योहारों पर देखा जाता है। क्योंकि पर्व या त्योहार पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधते हैं। त्योहार जीवन को नवीनता से भरते हैं। त्योहारों से नित्य जीवन की नीरसता दूर होकर जीवन में नई उमंग, नया उल्लास और आनंद पाई जाता है। वैसे तो भारत के लोग स्वभाव से ही उत्सव प्रेमी हैं। अन्य देशवाशियों की तुलना में हम भारतीय अधिक पर्व मनाते हैं। इसलिए भारत को त्यौहारों का देश कहा जाता है। व्यक्ति, समाज और देश के जीवन में त्यौहारों का अपना विशेष महत्व होता है। अतः त्यौहारों से भारतीय संस्कृति को गति मिलती है। बल मिलता है तथा उसका सही विकास हो पाता है। इसी पर मानव जाति का अस्तित्व निर्भर करता है।

भारत कृषि प्रधान देश है। कुछ त्यौहार कृषि से संबंधित है। जैसे 'संक्रांति'। जब फसल कटली है तो किसानों का मन खुशी से भर उठता है। किसान अपनी अच्छी फसल के लिए भगवान इंद्र को धन्यवाद देकर अपनी कृपा को सदैव लोगों पर बनाये रखने का आशीर्वाद

माँगते हैं। अतः मकर संक्रांति के त्यौहार को फसलों एवं किसानों के त्यौहार के नाम से भी जाना जाता है। दक्षिण भारत में यह 'पोंगल' भी कहा जाता है।

मकर संक्रांति पर सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करते हैं। जब सूर्य की गति दक्षिण की ओर से उत्तर की ओर होती है तो उसे उत्तरायण और जब सूर्य की गति उत्तर की ओर से दक्षिण की ओर होती है तो उसे दक्षिणायण कहते हैं। पुराणों में सूर्य के उत्तरायण काल को बहुत शुभ माना गया है। यह हर वर्ष जनवरी 13, 14 या 15 के बीच में मनाया जाता है।

भारत में अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग तरह से मनाया जाता है। आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, केरल और कर्नाटक में संक्रांति, तमिलनाडु में पोंगल, पंजाब और हरियाणा में लोहडी, अस्साम में बिहू के रूप में मनाते हैं। हर प्रांत में इसका नाम और मनाने का तरीका भी अलग-अलग होता है। भारत के अधिकांश क्षेत्रों में संक्रांति उत्सव तीन दिन मनाया जाता है। जिनमें से प्रत्येक दिन को अलग-अलग नाम और अनुष्ठानों के साथ मनाया जाता है।

भोगी

दक्षिण भारत में संक्रांति त्यौहार का आरंभ 'भोगी' पोंगल से होता है। पहला दिन भगवान इंद्र को समर्पित होता है। इस दिन अच्छी फसल व अच्छी बारिश के लिए भगवान इंद्र को प्रसन्न किया जाता है। भोगी से ही तमिलनाडु में धनुर्मास का समाप्त होता है। घरों को सफाई की जाती है। घर से पुरानी व अनुपयोगी वस्तुओं को आग में जला दिया जाता है। यह त्यौहार आमतौर पर हर साल 13 या 14 जनवरी को पडता है। यह तिथि तमिल महीने के अंतिम दिन पर निर्भर करती है। यह पोंगल दिन के पहले दिन मनाया जाता है।

इस दिन लोग सुबह जल्दी उठते हैं। सिरोस्नान करते हैं। नये कपड़े पहनते हैं। सब लोग अपने-अपने घरों के सामने तरह-तरह के रंगों और कद्दू के फूलों की एक पारंपरिक रंगोली बनाई जाती है, जिसे 'कोलम' कहते हैं। रंगोली को सजाने के लिए ताजा गाय के गोबर से 'गोब्बेम्मा'(उपलों) बनायी जाती है। जिसके चारों ओर आरतें नाचते हुए ''गोब्बेम्मा गीत'' लोरिया गाती हैं। जनवरी मास में ठंड ज्यादा होती है। इसलिए लोग ''भोगी आग'' जलाते हैं। जिसे 'चलिमंटलु' या 'भोगि मंटलु' कहते हैं। किंतु ये आग केवल ठंडक दूर करने के लिए ही नहीं अपितु स्वास्थ्य की दृष्टि से भी इनका अपना महत्व होता है। सूखे हुए उपलें उस आग में डालते हैं। हिंदू धर्म में गाय पूजनीय होती है अतः गाय के गोबर के उपलें बहुत ही शुभ माने गए हैं।

लोगों का विश्वास है कि इस प्रकार उपलों को आग में जलाने से घर और आस-पास की नकारात्मक ऊर्जा दूर हो जाती है और घर का सारा वातावरण सकारात्मक हो जाता है।

भोगी त्यौहार के अवसर पर 'भोगि पळ्ळु' (बेर के फल) का एक विशेष अनुष्ठान किया जाता है। बच्चों पर बेर के फल उंडेलकर आशीर्वाद दिये जाते है। ये आशीर्वाद साक्षात् भगवान श्रीमन्नारायण के आशीर्वाद के समान मानते हैं। उनकी दीर्घायु की मंगल कामना करते हैं।

संक्रांति

भोगी के दूसरे दिन 'संक्रांति' त्यौहार मनायी जाती है। उस दिन सूर्य भगवान मकर राशि में प्रवेश करता है। इसी दिन से उत्तरायण का आरंभ हो जाता है। साधारणतया यह त्यौहार हर वर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता है। कभी-कभी यह एक दिन पहले या बाद में मनाया जाता है। माना जाता है कि इस दिन सूर्य भगवान अपने पुत्र

शनि देव से मिलने उनके घर जाते हैं। शनिदेव मकर राशि का स्वामी माने जाते हैं। इस दिन से रातें छोटी और दिन बड़े होने लगते हैं तथा गर्मी का मौसम शुरू हो जाता है। दिन बड़ा होने से प्रकाश अधिक और रात छोटी होने से अंधकार कम होगा। अतः मकर संक्रांति पर सूर्य की राशि में हुए परिवर्तन को अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होना माना जाता है।

मकर संक्रांति के दिन किसान अपनी अच्छी फसल के लिए भगवान को धन्यवाद देते हैं। तरह-तरह के पखवान बनाकर खाते हैं। एक-दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं। इस दिन लोग पवित्र नदियों में स्नान करते हैं और दान पुण्य करते हैं। संक्रांति के दिन देश के अनेक भागों में लोग रंग-बिरंगी पतंगें उड़ाते हैं।

संक्रांति पर, अपने पूर्वजों के प्रति आभार व्यक्त करने और उनका आशीर्वाद लेने के लिए तर्पण अर्पित किया जाता है। उनको विशेषरूप से कपड़े रखे जाते हैं। इसलिए इसे 'पेद्द पंडुगा' (बड़ा त्यौहार) कहा जाता है। हमारे यहाँ तर्पण में नुव्वुल पच्चडी (तिल का अचार), मूंग दाल और आंवल चट्नी और पायसम के साथ वड़ा शामिल होता है। इस प्रकार संक्रांति व केवल दक्षिण भारत में बल्कि पूरे भारत में अलग-अलग नाम से अलग-अलग तरीके से बड़ी निष्ठा के साथ मनायी जाती है। जो भारतीय संस्कृति की उपादेयता है।

कनुमा

आंध्रप्रदेश का यह फसल उत्सव मकर संक्रांति के तीसरे दिन मनाया जाता है। विशेषकर यह किसानों का प्रमुख त्यौहार है। किसान लोग इस उत्सव को बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं। यह पशुओं का त्यौहार भी कहा जाता है। क्योंकि गाय और बैलों के साथी माने जाते हैं। इसके अलावा खेती-बाडी के काम में आनेवाले

सभी पशुओं और पक्षियों को भी इस त्यौहार के दिन पूजे जाते हैं। भारतीय परंपरा के अनुसार फसल के खेतों से उनके घर में उगाई गई फसल को एक महान संस्कृति माना जाता है। मवेशियों और पक्षियों के लिए दरवाजे पर टोकरियों में अनाज के धाने रखे जाते हैं ताकि मवेशियों ने किसानों को फसल काटने में जो मदद की है, उसके लिए उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं। फसल को खेतों में उनका बड़ा महत्व रहता है।

मवेशी किसानों की सब से बड़ी संपत्ति होती है। उनको किसान बड़े प्यार से पालते हैं। फसल उगाने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। कनुमा मवेशियों का त्यौहार भी कहा जाता है। इसलिए उस दिन उनको साफ करते हैं, सुंदर सजाते हैं। उनका सम्मान किया जाता है। उनकी विशेष पूजा होती है। उनको अच्छा खिलाया जाता है। घर के दरवाजे पर अनाज टोकरियाँ टांगी जाती हैं, ताकि पक्षियों को भी आहार मिले, वे भी खुश रहें।

कनुमा उत्सव उत्साह एवं उमंग का त्यौहार भी है। इसे ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी खुशी के साथ मनाते हैं। खासकर किसान मवेशियों के साथ अपना विशेष आत्मीय संबंध स्थापित कर लेते हैं।

कनुमा के दिन मवेशियों को नदी या तालाब के पास नहाते हैं। उनके माथे पर हल्दी और कुंकुम (केसर) लगाया जाता है तथा मोतियों की माला उनके गले में लगायी जाती है। गाय और बैलों के सींगों में विशेष सींग लगाते हैं। उन्हें रंगेजाते हैं। सजावट के बाद उनकी पूजा की जाती है और आरती दी जाती है। कनुमा मवेशियों के लिए आराम का दिन है और उस दिन उनको काम पर नहीं लगाया जाता।

कनुमा त्यौहार पर कुछ प्रतियोगिताएँ या खेल खेले जाते हैं। जिनमें जल्लिकट्टु (बैलों को दौड़ाना), कोडिपंदेलु (मुर्गों की लड़ाई) प्रमुख हैं। तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश में इनका अपना अलग महत्व है। इन्हें देखने लोग कोसों दूर जाया करते हैं। फिर भी ये खेल बड़े चाव से खेले जाते हैं।

निष्कर्षत

यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति में मकर संक्रांति त्यौहर का बड़ा महत्व है। भारत कृषि मूलक संस्कृति का देश माना जाता है। किसान लोग प्रकृति देवता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए हर फसल की पैदावर के बाद कोई न कोई पर्व मनाया जाता है। संक्रांति भी फसल की पैदाकर के उपलक्ष्य में मनाई जाती है। यह सूर्य और इंद्र भगवान को समर्पित है। मकर संक्रांति एक फसल त्यौहार है जो पूरे भारत में अलग-अलग तरीके से मनाया जाता है। फिर भी इसका मुख्य उद्देश्य समाज में एकता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना है। अतः भारत में अनेकता में एकता है। यह एक सांस्कृतिक उपलब्धि है।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

मूलतः श्री वेंकटेश्वर स्वामी की मूलविराट-मूर्ति की प्रतिष्ठा परम पावन गर्भालय में हुई है। वह आलय बारह फुट की चतुर्भुजी है। उसके सामने उसी प्रकार का एक उपकक्ष है। वह भगवान का शयन मंटप भी है। पहले भक्त वहीं से भगवान का दर्शन पाते थे। एक प्रदक्षिणा पथ भी है। इसकी चौडाई 5 फुट की है दक्षिण दिशा में। उत्तर दिशा में लगभग 17 फुट की है। मूलविराट के अभिषेक जल को ग्रहण करनेवाला एक कटाह भी वहाँ है। इसमें इकट्ठा अभिषेक जल एक छोटी नलिया से जाता है। उचित रूप में आजकल इसमें कुछ परिवर्तन हुए हैं। प्राचीन भारतीय शिल्प शास्त्र के अनुसार गर्भगृह(गर्भालय) और अर्द्ध मण्टप का निर्माण किया गया है। इनमें सीमित परिमाण में कांति मिलती है। भगवान के दर्शन से भक्तों के हृदय में आध्यात्मिक भावनाओं को यह प्रेरित करता है। कम कांति या सीमत प्रकाश में उज्वल मूलविराट का दर्शन असीम आत्मतोष देनेवाला ही है। दर्शन मात्र से भक्ति, गौरव, भय, आश्चर्य, दैवत्व आदि भावनाओं का संचार सहज ही भक्त के मन में हो जाता है। वहाँ भक्त को प्रशांत वातावरण मिल जाता है। घृत दीपों की मंद मंद कांतियों में भगवान का दर्शन भक्त की आत्मा को विकसित और आकृष्ट करने के उद्देश्य से ही योजना बद्ध रूप में व्यवस्थित है। श्री वेंकटेश्वर भगवान के मंदिर का और प्रधान शिखर(गोपुर) का दूर से दर्शन भी इसी प्रकार की अनुभूति भक्त को देती है। महामणि मण्टप का निर्माण भी इसी प्रकार हुआ है। वहाँ भी कुछ अंधियारा और उसमें धीमी कांतियों के बीच भगवान को देख पाने की व्यवस्था है। यहीं पास में घी के दीपों की कांति से विलसित मुख-मंटप है। यहाँ पर भगवान के मूल्यवान आभरणों को संदूकों में सुरक्षित रखा जाता है। यह सब ई. के बाद 13वीं शती की व्यवस्था थी। मंदिर से जुडा एक प्रवेश मार्ग है जो ''मुक्कोटि-एकादशी'' को ही खुलता है। इसको दूसरे ही दिन बन्द किया जाता है। इस व्यवस्था में अब कुछ परिवर्तन होगयी। अब 10 दिन तक खुलता है। भक्तों का विश्वास है कि उस दिन को उस मार्ग से भगवान की प्रदक्षिणम् (परिक्रमा) करना बहुत ही महत्वपूर्ण है एवं वह वैकुण्ठ प्राप्ति का मार्ग है। यह मार्ग बन्द होने के कारण शायद अभिषेक तीर्थ एक कटाह में (पत्थर का बना) संचित होता

है और वहाँ से बाहर इकट्ठा होने पर कटाह तीर्थ को भक्त स्वीकारते हैं। यह आजकल चालू नहीं है। भगवान का अभिषेक तीर्थ अत्यंत पवित्र है।

मुख-मंटप से जुडकर ही तिरुमहामणिमण्टप भी है। इसका निर्माण मल्लना अमात्यशेखर ने सन् 1417 में कराया था। अन्य दो प्राकारों के निर्माण संबंधी सूचनाएँ कुछ अप्राप्य हैं। इनका निर्माण कुछ शक्तिशाली और संपन्न राजाओं या भक्त, अधिकारियों द्वारा किया गया होगा।

श्री वेंकटेश्वर भगवान के लिए एक मंदिर होने की बात उनके अपने मंदिर से आखेट के लिए निकलने की घटना के वर्णन में मिलती है। वे पद्मावती से मिलकर अपने मंदिर में ही वापस आये। इसका उल्लेख तो वराह पुराण में मिलता है लेकिन उस मंदिर के निर्माता का उल्लेख उसमें नहीं है। भविष्योत्तर पुराण में स्पष्ट कहा गया है कि स्वयं भगवान ने तोंडमान राजा को मंदिर निर्माण का आदेश दिया था (अ. 13, श्लो. 26-39)। तोंडमान आकाशराजा के छोटे भाई है। तोंडमान से भगवान ने कहा था कि मेरा कोई भवन नहीं है। उसका निर्माण कर उन्हें समर्पित करना तोंडमान का काम है। भवन निर्माण के बाद ही श्री वेंकटेश्वर पद्मावती सहित अगस्त्याश्रम से वेंकटाद्रि गये। स्वामिपुष्करिणी के पास के स्थल निर्देश के साथ श्रीनिवास ने ही अपने लिए दो शिखरों(गोपुरों) और तीन प्राकारों सहित मंदिर निर्माण की बात कही थी। ध्वजस्तंभ निर्माण का भी उल्लेख है। सात द्वार, आस्थान मंडप, याग मंटप, गो-शाला, घुडसाल, हाथियों के लिए शाला, फूल मंडप, रसोई घर आदि से युक्त महा मंदिर का निर्माण किया गया। इनके साथ पेय-जल का कुँआ भी है। इस प्रकार भवन निर्माण की योजना स्वयं भगवान की ही कही जा सकती है।

राजा तोंडमान ने भगवान के आदेश का अक्षरशः पालन किया है। उन्होंने सुंदर अलंकृत विमान और गरुड मूर्ति का निर्माण किया। सुवर्ण कलशों की स्थापना की। एक योजन का पर्वत चढने के लिए सीढियाँ बनायीं। रास्ते पर यात्रियों को आराम देनेवाले हर योजना (आठ से दस मील) मंटपों का निर्माण किया। इतना कार्य संपन्न होने के बाद ही तोंडमान ने स्वामी को वेंकटाचल पर निर्मित मंदिर में प्रवेश करने की प्रार्थना की थी। श्री वेंकटेश्वर भगवान तब पद्मावती देवी समेत वेंकटाचल पधारे। उनके साथ इन्द्र, देवतागण और ऋषि-मुनि समूह भी था। वेद विद भी थे।

बस, श्रीनिवास गर्भालय में सुंदर दिव्य विमान तले आनंद के साथ रहने लगे। यह विमान आनंदनिलय-विमान कहलाने लगा। वह भक्तों को अमित आनंद प्रदाता है (श्लो. 81)। श्री वेंकटेश्वर के दो हाथों में शंख और चक्र विलसित हैं और दो हाथों में से दक्षिण हस्त उनके पादपद्मों की ओर इंगित करता है तो वाम हस्त कटि पर धरा है। यह कटि प्रदेश का वाम हस्त संकेत देता है कि भक्तों के लिए संसार सागर कटि तक ही सीमित है। अर्थात् भक्त के लिए जगत का जीवन एक सागर है तो उस सागर में वह डूबेगा नहीं। वह मात्र कटि तक की गहराई ही में रहेगा।

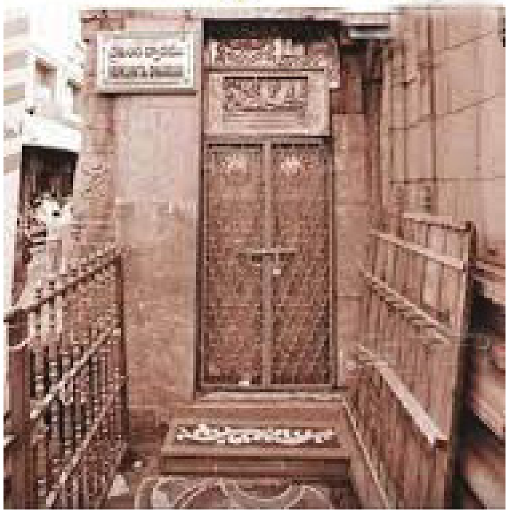

अर्थात् उसे पार करना इतना दुर्भर नहीं रहेगा। भक्त भगवान के चरण कमलों में आत्म संतोष प्राप्त करेगा (श्लो. 82-85)। भविष्योत्तर पुराण का यह अंश स्पष्ट कहता है कि मंदिर के निर्माण कर्ता राजा तोंडमान ही थे।

'मुक्कोटि प्रदक्षिणम्' (प्राकारम्) की दीवारों के कुछ पत्थरों पर लेख हैं। मंदिर के अंदर से मिले कुछ शिलालेख हैं। उनमें कुछ भूपालों के उल्लेख मिलते हैं जिन्होंने मंदिर के निर्माण और पुनरुद्धार कार्यों में भक्ति तथा प्रपत्तियों के साथ भाग लिया था। इनमें भूपाल श्रीमान विजयादित्य प्रथम उल्लेखनीय हैं। संभव है कि ये ही बाण राजा विजयादित्य महाबली बाणराय हो। ये पल्लव राजा विजयदंति विक्रमवर्मन (सन् 779 - 830) के सामंत राजा थे (ति.ति.दे. प्राचीन लेख, जिल्द-1, क्र.सं. 3, पृ. 10)। इसी क्रम में कोप्पात्र महेन्द्र पन्मूर (महेंद्रवर्मा I, पल्लव सम्राट, सन् 600-630); राजराज चोल ने, जो अपनी सोलह वर्ष की आयु में ही राज्य सिंहासन पर बैठे थे, भगवान के माथे पर शोभायमान स्वर्ण पट्टम (पट्टिका) बनाकर भेंट की; दोवागढ रानी परांतकदेवी अम्मन, जो परांतक II सुंदर चोल की पत्नी है (शिलालेख क्र.सं.14); उलगमादेवी, राजराज I की रानी (क्र.स.16); राजेंद्रचोल, राजराज I (सं.19) के पुत्र और उत्तराधिकारी है; वीर राजेन्द्र देव I (क्र.सं 22); कुलोत्तुंग चोल - I और उनकी महारानी अवनिमुलूदुडयाल (क्र.सं. 26-32); मधुरांतक पोट्टपि चोल अल्लुम तिरुक्कालत्ति देव (क्र.सं. 42), जटावर्मन सुंदर पांड्य I (क्रम. सं. 52, 54, 55) और विजय गंडगोपाल (क्र.सं. 67, 68, 69, 72, 74, 77, 79) हैं।

उक्त सभी 7वीं शती से 13वीं शती तक के इस प्रांत के राजा थे। इनके विवरणों से संबंधित शिलालेख 'मुक्कोटि प्रदक्षिणम्' के दीवारों पर और कुछ स्थानांतरित फलकों में हैं। मुक्कोटि प्रदक्षिणा प्राकार एकाधिक बार पुनर्निर्मित या पुनरुद्धरित है। इसलिए भी शायद कुछ फलक प्राकार से अलग हो मिले हैं। ये द्वितीय प्राकार में एक जगह सुरक्षित मिले हैं। इनमें कुछ तो विमान प्रदक्षिणा के सामनेवाले गोपुर के सामने ध्वजस्तंभ के पास भी प्राप्त हुए हैं। कुछ लेख तो बाह्य प्राकार पर भी हैं। मंदिर के मुखद्वार (महाद्वार) से जुडा प्राकार ही बाह्य प्राकार है।

इससे स्पष्ट होता है कि 'मुक्कोटि-प्रदक्षिणम्' के प्राकार की दीवारें 13वीं शताब्दी तक सुरक्षित थीं। उन पर राजराज चोल III; जटावर्मन सुंदर पांड्य I; वीर नरसिंहदेव यादवराय; विजयगण्ड गोपाल और अन्य शासकों ने 13वीं शती में लेख खुदवाये। इन शिलालेखों का मूल्य न जानने के कारण और बिना सही योजना के पुनरुद्धार के प्रयत्नों में शिलालेखों पर उत्खचित मूल्यवान सामग्री नष्ट हो गयी। वीर नरसिंह यादवराय ने 13वीं सदी में अपने स्थानत्तार (मैनेजर) तिरुप्पुल्लिणिदासर के निवेदन पर अपने शासन काल के 40वें वर्ष में (सन् 1245 के आस-पास), पुनरुद्धार की अनुमति दी थी। पुनरुद्धार की पक्रिया में जो भी लेख शिथिल हो गये थे उनका पुनर्लेखन भी करने के आदेश थे। उनको अपनी अपनी पूर्व जगहों पर रखने का भी निर्णय था।

चार चोल राजाओं के लेख (क्र.सं. 8, 9, 14, 19 और 88, पृष्ठ 12, 16, 22, 28 और 119 जो तिरुपति देवस्थानम् के संग्रह मूल वाल्यूम् I हैं) इसके प्रमाण हैं। राजशासन की विज्ञता के लिए प्रमाण स्वरूप भी हैं।

क्रमशः

(गतांक से)

रामो विग्रहवान धर्मः

- प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

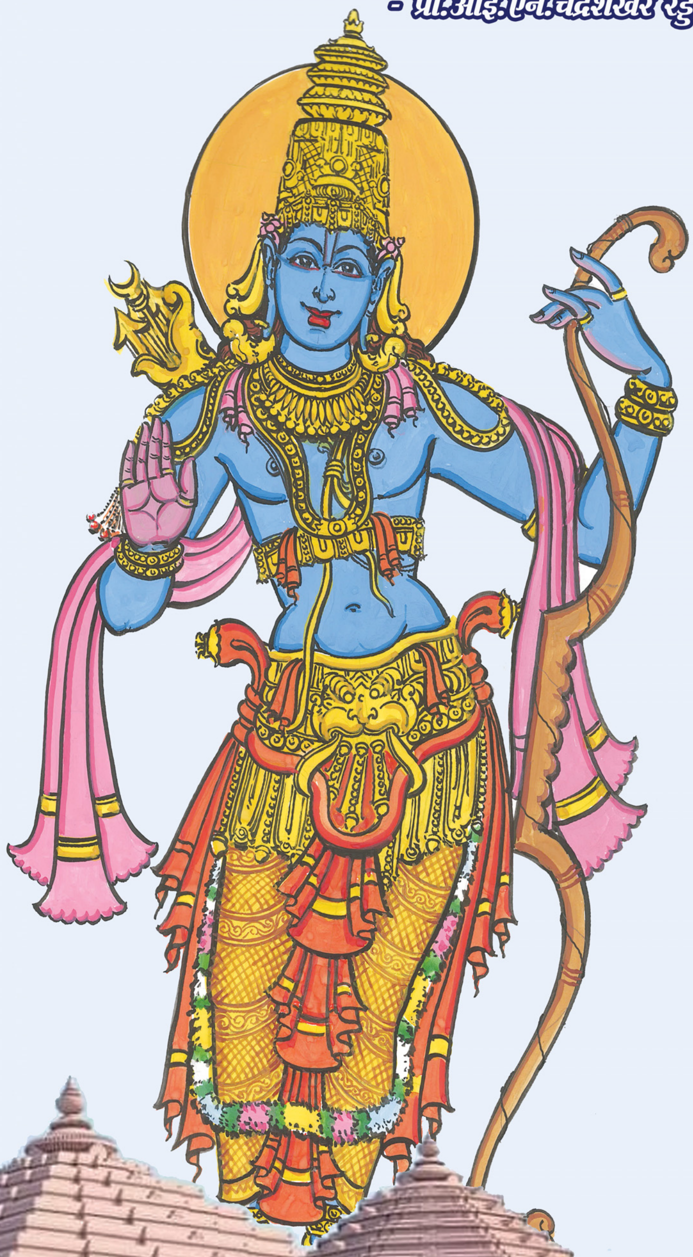

मर्यादा रक्षक की कार्यसाधना :

श्रीराम धरती पर उदित सब से सुंदर पुरुष हैं। तुलसीदास के शब्दों में -

श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन हरन भवभय दारुणं।
नवकंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणं।।

सौंदर्य मूर्ति श्रीराम सब से बडे मर्यादा पालक और कार्य साधक हैं। सत्य पालन और वचन पालन कार्यसाधक के श्रेष्ठ गुण माने गये हैं। मर्यादा की रक्षा में सत्य पालन और वचन पालन बडी भूमिका निभाते हैं। इन दोनों गुणों के लिए श्रीराम ही आदर्श हैं। वचन को तोडना रघुवंश की रीति ही नहीं है। सत्य पालन इक्ष्वाक क्षत्रियों की आत्मा ही है। किसी भी काम को अधूरा छोडकर जाने का स्वभाव भी राम का नहीं है। वह मर्यादा उल्लंघन माना जायेगा। साथ ही कार्य में असफलता होने पर उससे मुँह मोडने लेने का गुण भी राम का नहीं है। आज के मनुष्य के लिए यह उच्चादर्श है। आज का मनुष्य असफलता में आसानी से विचलित हो जाता है। प्रयत्न

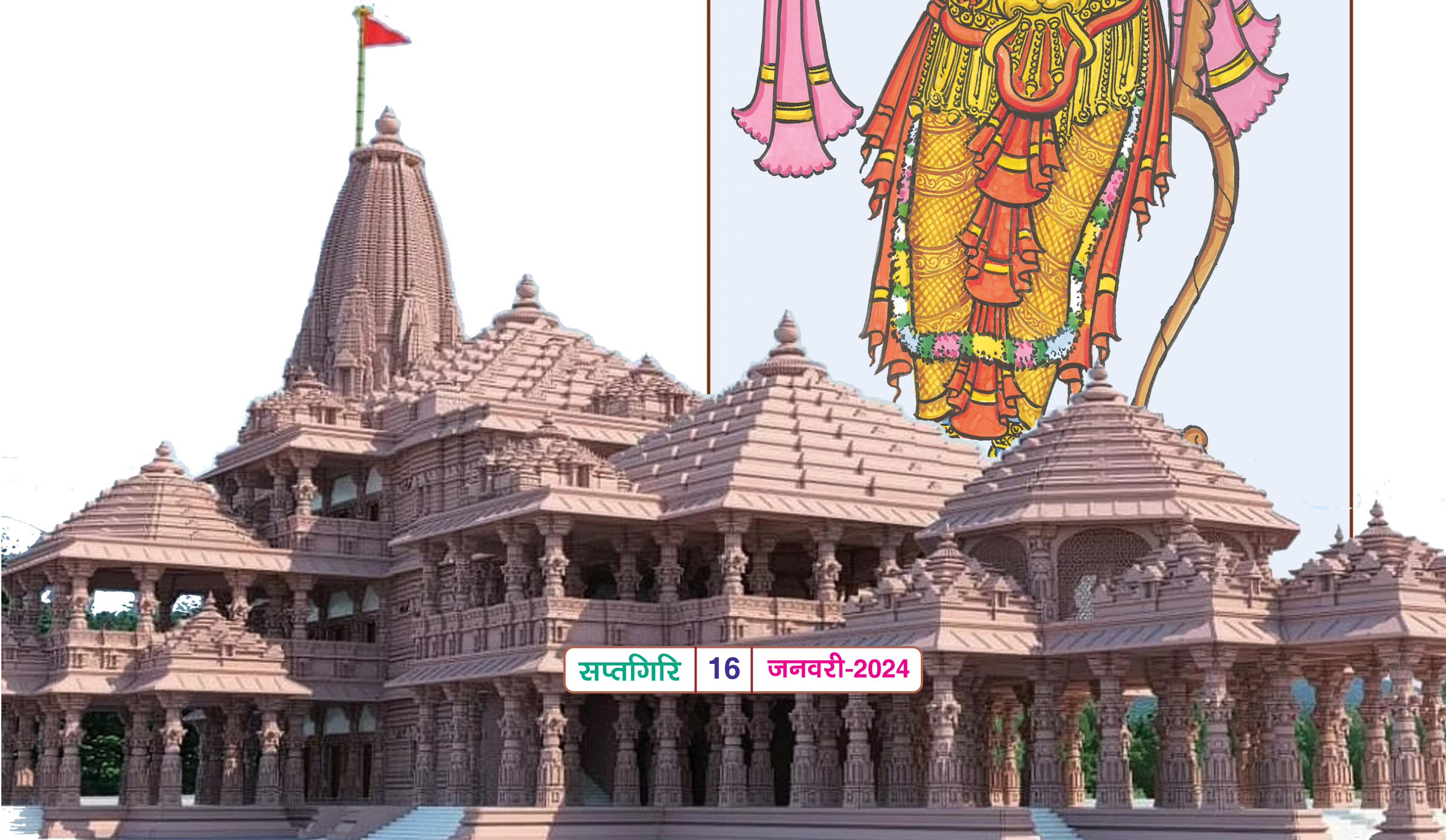

को भी बीच में छोड देता है। राम का चरित्र ठीक इस के विपरीत है। अपनी कार्य साधना में राम अपने सुखों को भी तुच्छ समझते हैं। इसलिए कई संदर्भों में अपने स्वसुख के विपरीत वे कार्य साधना करते दिखाई देते हैं। कार्यसाधक को भोगासक्ति नहीं होनी चाहिए। भोगासक्ति के कई संदर्भ राम के जीवन में हम पाते हैं। सिंहासन पर अपना अधिकार होने पर भी पितृवचन पालन के लिए सिंहासन से अपने को मुक्त करते हैं।

राम सब से श्रेष्ठ धर्म-पालक है। राम जैसे धर्म-पालक व्यक्तित्व किसी और चरित्र में हम देख नहीं सकते हैं। पुत्र धर्म, राज धर्म निभाने में राम अप्रतिम हैं। शिष्य धर्म निभानेवाले राम के बारे में गुरु विश्वामित्र का यह कहना राम के कार्यसाधक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालता है। तेलुगु भास्कर रामायणमु में इस रूप में विश्वामित्र से कहलवा गया है-

पित्र् वाक्यमु चेल्लिंचिति

क्रतु रक्ष मोनर्चि तद्वारा प्रतिपक्ष

प्रतित दुनुमाडि सुरमनि

हितमुलु चेसिति सुकीर्ति नेसगिति वत्सा।

हे वत्स! तूने पित्र् वाक्य का पालन किया। यज्ञ की रक्षा की है। तद्वारा राक्षसों का संहार किया। सभी का हित किया। ऐसा करके तूने मुझे सुकीर्ति दिलायी।

इसी संदर्भ में राम ने विश्वामित्र के साथ जनक की सभा में शिव धनु का भंग किया। क्रोधित परशुराम को अपने व्यवहार से शांत किया। परशुराम के अहंकार को नष्ट करके उन्हें ज्ञान प्रदान किया। उन्हें विश्वास दिलाया कि दोनों विष्णुवांश संभूत हैं। इस संदर्भ में राम के शक्ति-सामर्थ्य, महोदात्त गुण एवं कार्य साधक तत्व का पता चलता है। कैकेयी माँ के वरदान से चौदह वर्ष वनवास हर्षोल्लास में करनेवाले कार्यसाधक राम हैं।

कार्यसाधक सिर्फ धर्म-पालक ही नहीं होता बल्कि मर्यादा का ध्यान रखते हुए शरण में आनेवाले लोगों को अभयदान करनेवाला अप्रतिम वीर भी होता है। रावण के साथ युद्ध करने के पहले रावण के छोटे भाई विभीषण राम की शरण में आया। तब सब के विरोध के बावजूद राम ने विभीषण को शरण दी। इस संदर्भ में राम के वचन उन के व्यक्तित्व का साक्षी है-

अभय दानमुनकु नश्वमेधादुलु

वेयु नीडुगावु विशदकीर्तु

लखिल दिशल नेसगु नार्तु रक्षिंचिन

नट्लुगान संदियंबु वलदु।

अर्थात हजारों अश्वमेध यज्ञ भी अभयदान के समान नहीं है। आर्ति की रक्षा करने से अखिल दिशाओं में कीर्ति फैलेगी। इस में किसी को संदेह नहीं करना चाहिए। इस रूप में सर्वकाल सर्वावस्था में राम धर्म पालक रहे। प्रत्येक अवस्था में उन का धर्म पालन लोक प्रचलित बन कर रह गया है। इसलिए राम कथा तब से लेकर अब तक आदर्श बना हुआ है। राम कथा राम के कार्यसाधक गुण की यशोकीर्ति गाती है। इसलिए राम आंध्रों के प्रिय देव बने हैं।

श्रीराम के मर्यादा और धर्म पालन का अनन्य स्वभाव :

श्रीराम जैसा अनन्य स्वभाव किसी और मानव चरित्र में हम नहीं पाते हैं। श्रीराम ईश्वर हैं। क्या मानव मात्र ईश्वर के स्वभाव को पहचान सकता है? समझ सकता है? किंतु श्रीराम पूर्ण मानवाकार में अवतरित ईश्वर हैं।

धर्म की रक्षा हेतु मानवाकार में अवतरित ईश्वर है। गीता के अनुसार ईश्वर धर्म की स्थापनार्थ अवतरित होते रहते हैं। तुलसी बाबा ने अपने मानस में राम के इसी रूप की प्रतिस्थापना की है-

जब जब होइ धरम कै हानी।
बाढहि असुर अधम अभिमानी।।
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी।
सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी।।
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।

प्रभु अत्यंत करुणामय हैं। जब जब धरती पर असुरी प्रवृत्ति के लोग विप्र, गौ और देवताओं को त्रास पहुँचाते हैं, तो वे विविध रूप से अवतार लेकर धर्म की पुनः स्थापना करते हैं। दुष्टों का दमन करते हैं। इस के अतिरिक्त श्रीराम के अनेक अनन्य स्वभाव के गुण राम कथा में व्यंजित हुए हैं।

अभिमान और अहंकार को दूर करने का राम मंत्र :

श्रीराम भक्त के अभिमान या अहंकार को दूर करते हैं। तुलसी ने ही समस्त रामकवियों ने श्रीराम के इस स्वभाव को माना है। तुलसी ने तो लिखा है-

सुनहु राम कर सहज सुभाऊ।
जन अभिमान न राखहिं काऊ।।
संसृत मूल सूलप्रद नाना।
सकल सोक दायक अभिमाना।।
ताते करहिं कृपानिधि दूरी। सेवक पर समता अति भूरी।।

(रा.च.मा.7.74-57)

श्रीराम भक्त के अभिमान को ऐसा दूर करते हैं जैसे एक माँ अपने पुत्र के विरोध करने पर भी उस के फोडे को चीरती है। ठीक उसी प्रकार श्रीराम भी अपने अभिमानी भक्त के इस दुर्गुण को किसी घटना को निमित्त बनाकर इस दोष का परिमार्जन कर उसे पुनः सहज और सरल बना देते हैं। तुलसी की इस चौपाई में यही भाव उभरता है-

जिमि सिसु तन बन होइ गोसाई।
मातु चिराव कठिन की नाई।।
तिमि रघुपति निज दास कर हरहिं मान हित लागि।
तुलसीदास ऐसे प्रभुहि कस न भजहु भ्रम त्यागि।।

(रा.च.मा.7.74-8, 74)

रामचरित मानस का नारद मोह प्रसंग का आशय भी यही है।

शरणार्थी को सादर सम्मान देना :

अपने इसी स्वभाव के कारण श्रीराम ने शरण में आये विभीषण को अपना बना लिया। विभीषण प्रसंग में श्रीराम स्वयं कहते हैं-

सुनहु सखा निज कहहुँ सुभाऊ।
जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ।।
जौं नर होइ चराचर द्रोही।
आवै सभय सरन तकि मोही।।
तजि मद मोह कपट छल नाना।
करउँ सद्य तेहि साधु समाना।।

(रा.च.मा.5-48-1-3)

जो सभी धर्मों अर्थात कर्तव्य-कर्मों का आश्रय छोडकर मेरी शरण में आता है तो मैं उसे सभी पापों से मुक्त कर देता हूँ।

दोषी शरणागति का उद्धार :

शरण में आये पापी को भी श्रीराम क्षमा करके बिना उस के दोषों को गिने बिना अपना बना लेते हैं। यह श्रीराम का उदात्त गुण है। रामचरित मानस में तथा विनयपत्रिका में तुलसी ने श्रीराम के इस गुण का यशगान किया है। मानस में भरत के मुँह से कहलवाया है-

जन अवगुन प्रभु मान न काऊ।
दीन बंधु अति मृदुल सुभाऊ(रा.च.मा-7-1-6)

विनयपत्रिका में तुलसी ने सोदाहरण इसी का समर्थन किया-

सुनि सीतापति सील-सुभाउ।

अपनाये सुग्रीव विभीषण, तिन न तज्यो छल-छाउ।

भर सभा सनमानि, सराहत, होत न हृदय अघाउ।।

निज करुना करतूति भगतपर चपत चलत चरचाउ।

सकृत प्रनाम प्रनत जस बरनत, सुनत कहत फिरि गाउ।।

(पद - 100)

स्पष्ट है कि विभीषण, सुग्रीव जैसे छल को पूरी तर नहीं तजनेवालों का उद्धार भी करुणामय श्रीराम ने इसी स्वभाव के कारण किया है।

अपना ऐश्वर्य और प्रभुता भुलाकर निज भक्तों के वश में रहना :

भक्त अधीन में रहनेवाले परम ईश्वर श्रीराम हैं। अपने ऐश्वर्य और वैभव को भी भूल कर वे भक्त के अधीन में हो जाते हैं, सिर्फ उन के प्रति भक्ति और प्रेम रखने से। तुलसी ने कहा है-

ऐसी हरि करत दास पर प्रीति।

निज प्रभुता बिसारि जन के बस,

होत सदा यह रीति।।

जिन बाँधे सुर-असुर, नाग-नर,

प्रबल करम की डोरी।

सोइ अबिछिन्न ब्रह्म जसुमति हठि

बांध्यो सकत न छोरी।।

परब्रह्म को यशोदा जी ने प्रेमवश ऊखल से ऐसा बांध दिया कि जिसे वह खोल न सके। सुर-असुर, नाग, नर आदि की भक्ति में भी प्रभु ऐसा ही व्यवहार करते हैं।

नाम स्मरण मात्र से भक्त का हो जाना :

नाम स्मरण मात्र राम भक्त का उद्धार करने तत्पर होते हैं। जो भक्त श्रीराम से संबंध जोडता है उस का उद्धार श्रीराम करते हैं। भगवान शिव देवी पार्वती को राम कथा सुनाते हुए कहते हैं कि जीव ईश्वर से कोई भी संबंध क्यों न जोडे, वे उसके कल्याण का सारा दायित्व अपने ऊपर ले लेते हैं। यह संबंध पिता-पुत्र का हो, स्वामी-सेवक का हो, गुरु-शिष्य का हो, सखा-भाव का हो अथवा शत्रुता का भी क्यों न हो। उन से दृढ संबंध स्थापित कर नित्य स्मरण मात्र से वे उस का उद्धार करते हैं।

उमा राम मृदु चित्त करुनाकर।

बयर भाव सुमिरत निशिचर।।

देहिं परम गति सो जियँ जानी।

अस कृपाल को करुहु भवानी।।

अस प्रभु सुनि न भजहिं भ्रम त्यागी।

नर मतिमंद ते परम अभागी।।

अर्थात हे उमा, यद्यपि राक्षसों ने श्रीराम को अकारण अपना शत्रु माना और युद्ध किया, फिर भी वे इतने कृपालु हैं कि उन्हें योगियों को भी दुर्लभ अपना परंधाम प्रदान किया। श्रीराम के ये अनन्य स्वभाव गुण बाकी से अलग और भक्तों के लिए कामधेनु वरदान बने हुए हैं।

श्रीराम मनुष्य के रूप में जन्मे ईश्वर है। मनुष्य की परिणति कैसे माधव के रूप होती है, इस उदात्त मार्ग को श्रीराम की जीवनी प्रशस्त करती है। भारतीय धर्म के लिए इससे उच्चतम कोई दूसरा हो ही नही सकता है। राम के ये गुण जीवन में मूल्यों का, मर्यादाओं का अनुपालन, धर्म के प्रति असीम प्रतिबद्धता सचमुच ही किसी मानव को माधव में परिणत कर सकती है, इस में कोई अत्यूक्ति विषय नहीं है। राम इसलिए धर्म, मूल्य, मार्यादा के विग्रहवान रूप है। भारतीयों के लिए श्रीराम के ये ही गुण उच्चादर्श हैं।

(समाप्त)

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तृतीय आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

ईशान दिशा :

तब ईशान दिग्भाग में छिपे चोरों का संहार भी किया। इस रूप में चक्र राज ने अष्टदिशाओं को राक्षसों से निष्कंटक बनाकर देश में शांति की स्थापना की। तदूपरांत चक्र राज ने अपने सकल बलों के साथ श्री वेंकटाद्री पर आकर स्वस्वरूप धारण करके अंतर्विमान में प्रवेश किया। फिर वह हरि के दक्षिण हस्त में विराजमान हो गया। इस रूप में देश सारे सुरक्षित होने से स्वामी के महोत्सव बिना किसी रुकावट के होते रहे। इस रूप में कहनेवाले सूत को देखकर तब शौनकादि मुनियों ने इस रूप में कहा।

श्रीनिवास स्वामी के लीला-विनोद :

श्रीनिवास स्वामी का चरित चित्र विचित्र है। साथ ही कानों को अत्यंत आनंद देनेवाले रसायन समान है। इसलिए बहुत कुछ सुनने के बाद भी तृप्त नहीं हुए। श्री वेंकटेश्वर ने इस रूप में शेषाचल पर बस कर कौन से लीला-विनोद किए? किन किन को क्या क्या दिया? बताइए कि कृत, त्रेता, द्वापर युगों में किस क्रम से लीला-विनोद किया? कलियुग में किस विधान में होगा? उस ईश्वर के द्वारा किए गए लीला-विनोद चरित कर्णपर्व के रूप में हमें बताइए। हे सूत! हे सत्पूत! धीसमेता! ''मोद से शौनकादि मुनियों ने वनज नेत्र के चरित को सुनने की इच्छा से प्रश्न करने पर विनीत सूत ने इस रूप में कहा।'' हे मुनीश्वरवर्य! सुनिए! श्री वेंकटेश्वर के लीला-विनोदों को। परात्पर स्वरूपी पंकजाक्ष ने आदि अवतार लेकर राक्षसों का संहार करके सुरेंद्र आदि मुनियों के आश्चर्य से देखने पर धरणी पर भक्तों के उद्धार करने के लिए शेषाचल पर बस गए। धरती पर बस कर श्री वेंकटेश्वर भक्तों की पूजा से परिपूर्ण हुए और अत्यंत प्रसिद्ध हुए। भक्तों के कारण शेषगिरिवास के रूप में सारे लोकों में प्रचलित हुए। सारे भक्तों की पूजा करने से उन की मनौतियों का रमा समेत प्रीति से पूरा करनेवाले भगवान के रूप में विख्यात हुए।

वे वेंकटेश्वर कलियुग में घन मौन मुद्रा में अर्चामूर्ति के रूप में बसे। वे अपने चतुर्भुजाओं से तथा कर्म नेत्रों के साथ दिखाई देते हैं। भक्तों से सीधा बात नहीं करते हैं। लेकिन स्वप्नों में आकर आवश्यक बातें करते हैं। सपना टूटते समय मायावी बन कर अदृश्य हो जाते हैं। सारे मनुष्यों के मन में अपने पर मोह को पैदा करते हैं। उन से

धन प्राप्त करने के लिए उन के मन में भय को पैदा करते हैं। उन के द्वारा धन वसूल करते हैं। बाद में उन का उद्धार करते हैं। मोक्ष की कामना करते हुए देहापेक्षा को मन से छोड कर अत्यंत प्रीति से अपनी ही पूजा करनेवाले भक्तजनों को वे साक्षात दर्शन भी देते हैं।

वैकुंठ से आये विमान को एक बार उन को दिखाते हैं। फिर वे अदृश्य भी हो जाते हैं। आनंदनिलय में विराजमान होकर अर्चामूर्ति के रूप में भक्तों को दिखाई पडते हैं। वे सदा अंतर्विमान में ही रहते हैं। उस विमान को देवताओं को ही दिखाते हैं। मनुष्यों को नहीं दिखाते हैं। बडी इच्छा से मनुष्यों से बाह्य पूजा करवा लेते हैं, फिर गुप्त रूप में देवताओं से भी पूजा करवा लेते हैं। वे रमाविभु अपनी शरण में आनेवाले मनुष्यों की मनौतियों को पूरा करते अपनी महिमाओं को दिखाते हैं। अल्प दान को भी बडा चढाकर देखते हैं। स्वल्प पूजा से भी संतुष्ट हो जाते हैं। भक्तों को पुण्य और मोक्ष आदि प्रदान करते हैं। उस वेंकटेश का महिमा-गायन करना भक्तों के लिए संभव नहीं है।

महिमावान वेंकटगिरि महिमा को जान कर उपासना करनेवाले पुण्यात्माओं को वे साक्षात्कार होते हैं। मनौती करने पर उन्हें बडी दया से वरदान देते हैं। अप्राकृत होते हुए भी प्राकृत रीति से देश के जनों के साथ घूम घाम कर अपने पर मोह पैदा करके, प्रेम दिखाते उन्हें बुला बुलाकर 'मनौतियों और भेंटों के साथ अपने पहाड पर कब आयेंगे।' ऐसा उन्हें बताकर बडी धीरता से उन के साथ ही रहते उन को अपने पहाड पर बुला लेते हैं। तब वे भक्त वेंकटाद्री पधार कर सकल महोत्सव करते हैं। फिर वेंकटेश्वर उन्हें वरदान और भाग्य प्रदान करते हैं। इस रूप में उन में विश्वास पैदा करके बार बार पहाड पर आने के लिए उन्हें प्रेरित करते हैं।

ऐसे महोत्सवों के समय सकल जन पहाड पर आकर पुष्करिणी के जल में स्नान करके, अद्भुत ढंग से श्री

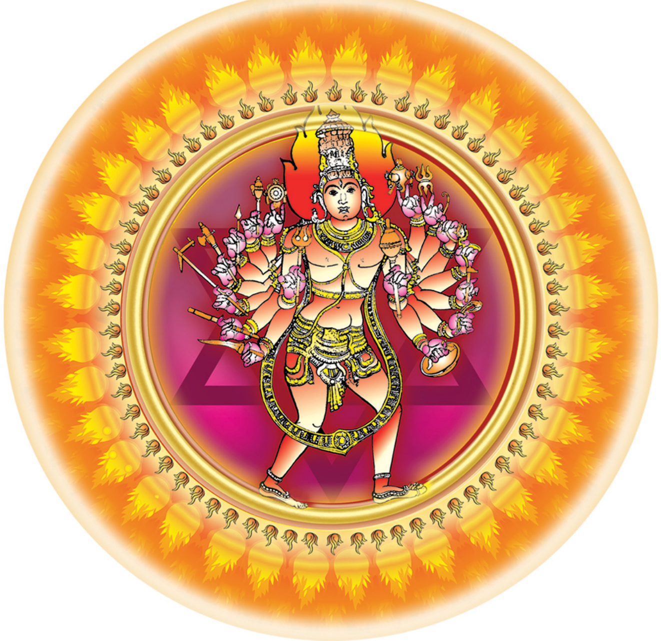

वेंकटेश्वर की अनेक फूलों के साथ उपासना करते हैं। उन के भक्त उन्हें बहु भक्ष्य, भोज्य, दोसा, लेह्य, जल आदि अर्पण करते हैं। उन्हें स्वामी प्रीति से ग्रहण करते हैं। किसी को भी दिखाई नहीं पडते हुए ये सारे कार्य स्वामी करते हैं।

महान माया विमान में स्वयं निज रूप में रहते, धरती पर सुवर्ण आनंदनिलय में घन शिला विग्रह अर्चारूप में दिखाई देते हैं। वे स्वामी स्वल्प दान से ही संतुष्ट होकर भक्तों को आयुरारोग्य, भाग्यादि विविध वरदान प्रदान करते हैं। उन की रक्षा भी करते हैं। अति नीच जाति के लोग क्यों न हो भक्ति से शरण में आकर पहाड के दर्शन करने मात्र से उन्हें क्षमा करके उन का उद्धार करते हैं। कर्माधिकार नहीं रखनेवाली स्त्रियों को, शूद्रों को भी वेंकटेश के चरणारविंद के दर्शन से विस्तार से सुस्थिर भक्ति पैदा होती है। इसलिए कलियुग में मूढ भक्तों का भी वेंकटेश्वर उद्धार करते रहते हैं।

धरती पर कलियुग में साधु स्त्रियों, शूद्र जनों के मन में स्वामी वेंकटेश्वर स्वयं उपदेश देकर माधव के प्रति प्रीति जगाकर उन का उद्धार करते हैं। इसलिए कलियुग में किसी भी रूप में श्री वेंकटेश्वर के समीप धरती पर पैदा होने के लिए देवतागण भी तत्पर रहते हैं।

कृत, त्रेता, द्वापर युगों में अनेक हजार वर्ष तप करने पर भी श्रीहरि का प्रसन्न होना दुर्लभ था। वहीं कलियुग में कोई भी मुहूर्त काल में निश्चल भक्ति से श्री स्वामी का ध्यान करने मात्र से अत्यंत सुलभ ढंग से वे प्रसन्न होते हैं। इसलिए कलियुग ही उत्तम है समझकर द्वीपांतर में रहनेवाले, सकल देशवासी कलियुग में प्रकाशवान श्री वेंकटेश्वर पर अमित भक्ति रखते हैं। इससे अलग श्री वेंकटेश्वर समान देव और कोई दूसरा नहीं है। यह भी सत्य है। कृतयुग आदि तीनों युगों में वेंकटाद्री कनकमय के रूप में रही। किंतु कलियुग में वह शिलामय रूप में दिखाई देती है। उस गिरि पर बसे श्री वेंकटेश्वर स्वामी के लीला-विनोद अनंत और अनेक हैं। इसलिए मैंने आप को अति संक्षेप में बताया। ऐसी वेंकटाद्री पर रहकर आचार और समाश्रय के साथ रहनेवाले विष्णु भक्त वैष्णवों को देख कर देवतागण भी आनंद का अनुभव करते हैं। अन्य धर्म के लोग भी श्री वेंकटेश्वर पर भक्ति रखते हैं। कलियुग में लोक जन अधिक धन कमाने की इच्छा से अनेक दुर्गुणों के आश्रय में जाते हैं। ऐसे लोग हरि पर एकाग्र चित्त होकर निश्चल भक्ति नहीं रख पाते हैं। अगर वे निश्चल भक्ति से स्वामी का ध्यान करते हैं तो बहुत आसानी से श्रीनिवास उन का उद्धार करते हैं। इसलिए सारे धर्मों में वैष्णव धर्म ही उत्तम है। इस रूप में कहनेवाले सूत को देखकर शौनकादि मुनियों ने कहा।

श्रीवैष्णव धर्म :

''वेंकटाद्री पर बसे श्री वेंकटेश्वर अत्यंत प्रचलित हुए। धरती पर रहनेवाले जनों पर स्वामी ने कैसे बडी कृपा दिखाई है, ऐसे श्री वेंकटेश्वर की सत्कथा सुनकर हमारे तप धन्य हो गए। शुभ है। हे सूत! आपने वैष्णव धर्म का नाम लिया। हे सूत! वैष्णव धर्म के बारे में और विपुलता से हमें बताइए।'' पूछने पर सूत ने सम्मति से मुनियों की ओर देखकर इस रूप में कहा। ''धरती के सागर में डूब जाने पर वराहस्वामी ने अपने शुभ्र और नुखीले दांतों से उठाकर धरती को फिर से यथा स्थान पर स्थापित किया। वे वराहस्वामी भूदेवी समेत शेषाद्री पर बसे। यह देखकर धरती के जन अत्यंत आनंदित हुए।'' 'वराहरूप और निर्मल वैष्णव धर्म के बारे में बताने के लिए' भूमि के पूछने पर, भूदेवी की ओर देखकर बडी दया से श्रीहरि ने इस रूप में कहा। वैष्णव धर्म के बारे में विस्तार से बता नहीं सकता, संक्षेप में बताऊँगा। क्यों कि वैष्णवाचार धरती पर अति गोप्य हैं। विश्वास के साथ जो कोई सुनेगा निस्संदेह उन को परलोक गति प्राप्त होगी। वैष्णव धर्म में गुरु ही धर्म है। सद्गुरु ही परमगति है। गुरु को आत्मा के रूप में विश्वास करनेवालों को धरती पर करनेवाले सारे पाप मिट जाते हैं। इसलिए गुरु की महिमा को जान कर भक्ति करनेवालों को वैष्णव कहा जाता है। यह सूत्र लोक प्रसिद्ध है।

कितने भी पाप क्यों न किया हो सद्गुरु के पास जाकर शरण मांगने पर सारे पाप मिट जाते हैं। गुरु के शिष्य बनने के बाद किसी भी प्रकार का पाप नहीं करना चाहिए। ऐसा क्यों है? क्यों कि गुरु के कटाक्ष के पहले अनजान में किए गए पापों से मुक्त होने का मार्ग गुरु बतायेगा। आचार्यानुग्रह प्राप्त होने पर पूर्व में जानबूझ कर किए गए पापों को गुरु दूर नहीं कर सकता है। इसलिए ऐसे पाप गुरु के द्वारा दूर नहीं होंगे यह जानकर वैष्णव लोग बुद्धिमान होते पापभीति से आचरण करना चाहिए। गुरु ही साक्षात विष्णु है, ऐसा शिष्य को विश्वास करना चाहिए। गुरु को मनुष्य मात्र के रूप में देखनेवाले को उत्तम गति प्राप्त नहीं होगी। संसार सागर में डूबते समय उत्तम शास्त्र धर्म रूपी हाथ बढा कर गुरु ही वैष्णव को ऊपर उठायेगा। साथ ही मोक्ष मार्ग में आगे ले जायेगा। ऐसा उपकार करनेवाले गुरु केलिए अपने को पाप कर्मों से दूर रखना ही प्रत्युपकार माना जाता है। 'आचार्य कौन है? सुनो मैं बताऊंगा।' भूदेवी को देखकर वराहस्वामी ने कहा।

क्रमशः

(युवा)

गीतामाधुरी

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

आमुख :

भगवद्गीता सर्व कालीन मनुष्य के लिए जीवनोपयोगी भगवान का उपदेश है। गीता आपत्काल में एक नर को नारायण-द्वारा प्रबोधित जीवन-वेद है। वह पांडव-मध्यम अर्जुन को स्वयं नारायण का प्रतिबोधित नीति-सूत्र है, जो पश्चात् अवस्था में वेदव्यास के द्वारा ग्रथित किया हुआ था। गीता ''अद्वैत'' भाव की वर्षा झड़ाता है।

मनुष्य की सामर्थ्यता का अर्थ-बोधन कर, उसे कार्यरत बनाने का एक अद्भुत क्षमता गीताशास्त्र रखता है। लौकिक तथा पारलौकिक तंत्र का यंत्र है गीता। गीता से जो भी मनुष्य अनुसंधित होता है, उसका पुनर्जन्म न हो करके, वह मानव भगवान का सान्निध्य पाता है। गीता प्रपन्न पारिजात है। ज्ञान का अपार पारावार है, बुद्धि, ज्ञान का समुंदर है, जो अमित स्वादिष्ट ईश्वरीय गुणों का पवित्र कुंड बन कर विद्यमान है।

भगवान श्रीकृष्ण है और गीताशास्त्र उनका कहा हुआ मित्र-वाक्य है। और, श्रीकृष्ण राजा वसुदेव का सुत है- यादव वंश प्रमुख। कृष्ण ने अपनी बाल्यावस्था में ही अनेक चमत्कार दिखाये थे। सात-आठ साल की आयु में ही बालकृष्ण ने दुर्जन कंस का वध किया था। चाणूर, मुष्टिक आदि जगज्जोधाओं को भार गिराया था। ऐसे जगद्विजेता भगवान श्रीकृष्ण ने, अपने चहेते बाँधव-पांडवों के पक्ष में कुरुक्षेत्रवाले अठारह दिन के घोर संग्राम में अधिनायक बन, युद्ध का नेतृत्व किया, जिस भयंकर समर में 77 करोड़ वीर योद्धाओं की मृत्यु हो गयी थी, जो आज तक एक अप्रतिमान कीर्तिमान बन कर है - समूचे विश्व के अंदर।

ऐसे घोर संग्राम के बीचों-बीच संसार के अद्वितीय 'भगवद्गीता' का आविर्भाव हुआ, जो कर्त्तव्य-विमुख ''नर'' को साक्षात् कारणजन्मी ''नारायण'' का उपदेश था।

गीता अति अद्भुत जीवनोपदेशी श्लोकों से भरा हुआ एक अमृतरसपान का कुंड है, जिसमें से कुछ इस प्रकार हैं -

श्लोक -*विद्या विनय संपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।*
शुनिचैव स्वपाकेन पण्डितास्समदर्शिनः।।
(गीता 5-18)

पंडित का मतलब है - आत्मज्ञान विशारदायानी- सब लोगों को, सर्वसहा जगत को आत्मज्ञान-स्वरूप के समान दरसाने वाला महानुभाव।

यहाँ-पंडित का अर्थ व्याकरण-पंडित, संस्कृत-पंडित नहीं होता। इस श्लोक के भावार्थ के अनुसार, पंडित का अर्थ बहुत ही व्यापक है। सच्चे पंडित का अर्थ है-

विद्या तथा विनय से भरा ब्राह्मण, अर्थात्, निर्गुण-प्रकाशक भी क्यों न हो - शुद्ध सात्विक गुण-

संपन्न ''गाय'' की तरह वाला भी हो - सात्विक गुण-प्रधान ''हाथी'' के समान गुणवाला - रजोगुण से परिपूर्ण ''शुनक'' के समान वाला - शुनक-माँस पचाकर खाने वाले अत्यंत तमोगुण-पूर्ण मनुष्य, जो चंडाल भी हो - जो भी गुण से परिपूर्ण मनुष्य भी सही, पंडित को समान लगता है।

इसी प्रकार, मनुष्य हो, जानवर भी क्यों न हो - सबको समान-दृष्टि से देखने वाला ''पंडित'' कहलाता है।

ठीक इसी तरह, जो मनुष्य सकल प्राणि-कोटि को समदृष्टि से देख न पाता, वह ''पामर'' है। अज्ञानी है, जिसे इस सृष्टि का समन्याय प्राप्त नहीं हुआ है।

श्लोक -*श्रद्धावान लभते ज्ञानं*
तत्परसंयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शांतिं
अचिरेणाधिगच्छति।। (गीता 4-39)

श्राद्धा, साधना-परायणता, इन्द्रिय-निग्रह - ये सब तत्व एक से एक परस्पर आधारित हैं। मन, इन्द्रियों को वश में पाने के लिए, और फिर-आत्मज्ञान पाने के लिए, संपूर्ण-तौर पर आत्मतत्व के ग्रहण करने के वास्ते-श्रद्धा से, तदेक दीक्षा के साथ, ध्यान-साधना करते रहना अत्यंत आवश्यक है। तभी, जान अथवा 'ब्रह्मज्ञान' की सिद्धि प्राप्त हो पायेगी। तद्वारा परम शांति भी मिलेगी।

जब श्रद्धा का लोप हो जाय, साधना अवरोहित हो जाय, विषयों पर आसक्ति बढ़ जाये, तो पतन अवश्य मिल जाता है।

ज्ञान उसी को मिलता है, जो ज्ञान-प्राप्ति में श्रद्धा रखता हो, ज्ञान पाने में जो तत्परता दिखाता है, ज्ञान उसी को प्राप्त हो जाता है, साधक को जितेन्द्रिय होना आवश्यक है। इन्द्रिय सुखों में आसक्ति ज्ञान-प्राप्ति को रोक जाता है।

जो तत्परता के साथ ज्ञान-प्राप्त करेगा, उसे पारलौकिक तत्व के ज्ञानों का परिचय मिल जाता है और वह ज्ञानी अचिर काल में ही मुक्ति पा करके भगवान का सान्निध्य प्राप्त करता है।

श्लोक -*मन्मना भव मद्भक्तो*
मद्यजी माँ नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्यैवं
आत्मानं मत्परायणः।। (गीता 9-34)

''निरंतर, मेरे बारे में सोचो। तुम मेरी महिमाओं पर समर्पित (हावी होकर) रहो। मेरे ही पूजा-पाठ में रत रहो। मेरा ही प्रणाम करो। तुम अपना मन और शरीर मुझे ही अर्पित करो, तो निश्चित रूप से मेरे पास आ जाओगे, मुझे अवश्य पा जाओगे।''

इस श्लोक में भगवान की प्राप्ति का मार्ग दिखाया गया है। उस मार्ग पर जोर दिया गया है। किन-किन आचरणों के द्वारा भगवदनुग्रह-प्राप्ति हो सकता है, उनका सिर्फ भगवान ही बता रहा है।

इसमें भगवान अर्जुन (साधक) से सच्चे योग में भगवान के साथ अपनी चेतना को एकजुट करने के लिए कहते हैं। साधक उनकी पूजा करता है। मन को उनके दिव्य रूप पर ध्यान में लगाता है। और, शुद्ध विनम्रता के साथ प्रणाम करता है।

समापन

तिरुमल-गिरियों पर विराजमान भगवान श्री वेंकटेश्वर गीताकार श्रीकृष्ण का ही शेषावतार है, जो एक पादवाली धर्मदेवता को कलियुग पार कराने में - ब्रह्मेंद्रादि दिक्पालक-गणों के साथ निरंतर कार्यरत है।

उपरोक्त श्लोकार्थ के नितांत और निर्मम आचरण से हम-सब श्री बालाजी का अनुग्रह प्राप्त कर सकेंगे। हम सब सदैव श्री वेंकटेश्वर का स्मरण करते रहेंगे। उसीका स्मरण करेंगे। उसी का सेवन करेंगे। उसी को प्रणाम करेंगे। हर तरह हम लोग श्री वेंकटेश्वर की शरण में आकर सर्वथा सुखी रहेंगे। इदम् स्थिरम्! इदम् सत्यम्!!

मिथ की महिला चरित

देवहूति

- डॉ.के.एम.भवानी

देवहूति कर्दम प्रजापति की पत्नी है। भगवान कपिल की माता है। स्वयंभुव मनु और शतरूपा उसके माता-पिता थे। वह अद्वितीय सुंदरी भी है। वह एक बार अपनी सहेलियों के साथ अपने राजमहल के सामने खेलती रहती है तो आकाश में विहरण करनेवाले एक गंधर्व उसकी सुंदरता को देखकर मूर्छित होकर विमान से गिरकर नीचे पृथ्वी पर पड़ जाता है। ऋषि कर्दम विधाता ब्रह्म के मानस पुत्र थे। ब्रह्म ने उसे सृष्टि को आगे बढ़ाने का आदेश दिया। वास्तव में कर्दम को वैवाहिक जीवन पर रुचि नहीं थी। वह संन्यासी बनकर जीना चाहता था। लेकिन जब पिता ने उन्हें आदेश दिया तो उसका पालन करना अपना कर्तव्य समझा और शादी करना चाहा। भागवत, पुराण के अनुसार पिता ब्रह्म के आदेश के बाद ऋषि कर्दम ने विष्णु भगवान के दर्शन के लिए दस हजार साल तप किया। जब भगवान विष्णु प्रत्यक्ष होकर वर माँगने को कहा तो तब कर्दम ने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए अनुकूल पत्नी को माँगा। तब विष्णु भगवान ने कहा कि स्वयंभुव मनु और शतरूपा की पुत्री देवहूति कर्दम के लायक पत्नी है। मनु और शतरूपा बहुत जल्दी ही अपनी पुत्री के साथ कर्दम के आश्रम में आएँगे और उससे शादी का प्रस्ताव रखेंगे। कर्दम और देवहूति का विवाह हो जाएगा। उन्हें नौ पुत्रियाँ पैदा होंगी। बाद में विष्णु भगवान खुद कपिल के नाम से उनके पुत्र के रूप में उद्भव होगा।

भगवान विष्णु के कहने के अनुसार एक दिन स्वयंभुव मनु और शतरूपा अपनी पुत्री देवहूति के साथ ऋषि कर्दम के आश्रम में आए क्योंकि जब उन्होंने देवहूति से उसकी शादी की बात की, तब वह ऋषि कर्दम से शादी करने की इच्छा प्रकट की। देवहूति देवर्षि नारद और अन्य ऋषि-मुनियों से कर्दम की महानता सुन चुकने के कारण वह उसको ही पति के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लेती है इसलिए माता-पिता से यही बात कहती है तो वे उसे मुनि के पास लेकर आते हैं। कर्दम भी उससे शादी के लिए राजी हो जाता है। लेकिन यह शर्त रखता है कि वह पिता की आज्ञा के अनुसार सृष्टि को आगे बढ़ाने हेतु शादी करना चाहता है इसलिए पत्नी संतान प्राप्त करते ही वह संन्यासाश्रम स्वीकार करेगा। देवहूति इस शर्त को मानकर शादी के लिए राजी हो जाती है। मनु और शतरूपा उनकी शादी करके चले जाते हैं।

शादी के बाद देवहूति बहुत ही लगन और श्रद्धा से पति की सेवा करती रहती है। वह कभी भी यह घमंड नहीं दिखाती है कि वह अद्वितीय सुंदरी है, राजकुमारी है। इस तरह कई साल बीत जाते हैं। एक दिन कर्दम अपनी पत्नी देवहूति को देखकर उसकी सेवा से बहुत प्रसन्न हो जाता है। वह तब महसूस करता है कि पतिव्रता देवहूति पति की सेवा करने में अपना शरीर पोषण भी भूल चुकी है। वह अद्वितीय सुंदरी का शरीर क्षीण होकर वह तपस्विनी जैसी बन गई है। इसलिए कर्दम के मन में पत्नी के प्रति करुणा उमड़ पड़ती है और वह पत्नी से कहता है कि सतत धर्माचरण के द्वारा भगवान की कृपा और कुछ महिमावान सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। अब तप के द्वारा कर्दम को जो कुछ भी संपत्ति, लाभ प्राप्त हुआ हैं, उसकी सेवा करने के कारण वे सब देवहूति को भी प्राप्त होते हैं। इसके साथ-साथ कर्दम उसे दिव्य दृष्टि का वर भी देता है, जिससे देवहूति समस्त सृष्टि को देख सकती है। ऐसा वर देने के बाद ऋषि कर्दम पत्नी की संतान पाने की चाह को समझ लेता है और पत्नी की कामना की पूर्ति के लिए एक दिव्य विमान का सृजन करता है।

उसमें कदम रखने से पहले कर्दम ने पत्नी देवहूति को बिंदू सरोवर में नहाकर आने को कहता है। देवहूति बिंदु सरोवर में कदम रखते ही कई सुंदर स्त्रियाँ देवहूति के सामने आकर उसे प्रणाम करके उससे कहती हैं कि वे उसकी परिचारिकाएँ हैं। वे उसे नहलाकर, दिव्य आभरणों

से सजाती हैं और उसे आइने के सामने ले जाती हैं। आइने में अपनी सुंदरता को देखते ही देवहूति के मन में पति की याद आती है। तुरंत वह अपने पति कर्दम को पास पाती है। तब से वे दंपति उस विमान में विचरण करते हुए कई साल आनंदमय जिंदगी बिताते हैं। उन्हें नौ बेटियाँ पैदा होती हैं। एक दिन ऋषि कर्दम अपने कहने के अनुसार संन्यासी बनना चाहता है तो देवहूति प्रार्थना करती हुई कहती है कि उसे अभी तक बेटियाँ ही पैदा हुई हैं उसे एक पुत्र भी चाहिए।

तो ऋषि कर्दम भगवान विष्णु की बातें भी याद करके पत्नी की वह इच्छा भी पूरी करना चाहता है। और कुछ समय तक सांसारिक जिंदगी में बने रहने को राजी हो जाता है। कुछ समय के पश्चात् भगवान विष्णु ही कपिल के अवतार में उन्हें पुत्र बनकर पैदा होता है। पुत्र प्राप्ति के बाद कर्दम संन्यासी बनकर तप करने चला जाता है। जाने के पहले पत्नी देवहूति से कहता है कि भगवान विष्णु ही कपिल नाम से उनके पुत्र के रूप में उद्भव हुआ है। वह देवहूति की सारी शंकाएँ दूर करके उसका उद्धार करेगा। एक दिन देवहूति अपने पुत्र साक्षात् भगवान विष्णु का अवतार कपिल के पास जाकर कहती है कि- ‘‘महात्मा! मुझे मालूम है कि आप मानवों के अज्ञान दूर करके उन्हें ज्ञान बोध करने अवतरित हुए हैं। जिंदगी भर इंद्रियों के वश होकर अज्ञान में डूबे हुए मुझ जैसे लोगों केलिए मोह से मुक्ति पाने का मार्ग बताइए।’’ तब कपिल माता देवहूति को आध्यात्म विद्या को समझाता है। वह कहता है कि सारे बंधनों का मूल कारण मन ही है। इसलिए यह जानना जरूरी है कि आत्मा शरीर से भिन्न है। मन को वश में रखकर भगवान को सर्वस्व अर्पण करने की भक्ति मार्ग ही मोक्ष प्राप्ति के लिए उत्तम मार्ग है। साधु लोग हमेशा भगवान के स्मरण करते रहते हैं इसलिए सज्जन संगति करना जरूरी है।

माता के और पूछने पर कपिल देवहूति को भक्ति योग, तत्व ज्ञान, सृष्टि रहस्य, विधान, प्रकृति-पुरुष के लक्षण, आत्म स्वरूप, जीव को आत्म दर्शन, प्रकृति-पुरुष वियोग, काल गमन, पिंडोत्पत्ति क्रम, जीव का जन्म, जीव की विभिन्न दशाएँ, मृत्य, मोक्ष प्राप्ति के मार्ग सब कुछ सविस्तार समझाता है। अंत में कपिल देवहूति से कहता है कि ‘‘माँ! मैंने आपको जो तत्व बोध किया, वह सब परम रहस्य है। उसे योगियों को ही उपदेश करना है। दुष्ट लोगों को, दुराचारों को, भक्तिहीनों को, पत्नी, पुत्र, धन अभिलाषों को, भगवान पर द्वेष रखनेवालों को नहीं बताना है। ऐसे लोगों को बताना अरण्य रोदन के समान है। यह बोध अगर सफल होना है तो पात्र शुदि्ध रहना भी जरूरी है। श्रद्धा, भक्ति, नीति, शांति, वैराग्य आदि लक्षण जिसमें होते हैं, वे ही उपदेश के पात्र हैं और उसको किया गया बोध सफल होता है।’’

कपिल से यह सारा ज्ञान पाने के बाद देवहूति उसे विभिन्न तरीकों से स्तुति करती है- ‘‘हे भगवान! विधाता ब्रह्म तुम्हारे नाभि कमल से जन्म लेकर भी तुम्हारी माया को समझ नहीं पाता है। मेरे पूर्व पुण्य फल के कारण ही मैं तुम्हें अपने गर्भ से पैदा कर सकी हूँ। इससे मेरा जन्म धन्य हुआ है। तुम दुष्ट शिक्षण, शिष्ट रक्षण के लिए देह धारण करते हो। अब तुम ज्ञान मार्ग को आसानी से समझाने के लिए अवतरित हुए हो। परमपुरुष, परब्रह्म, वेदमूर्ति तुम्हें पुनः पुनः प्रणाम।’’ कपिल माता को आशीष देकर चला जाता है। तब देवहूति अपने सर्वस्व त्यागकर सरस्वती नदी तट के बिंदु सरोवर के किनारे जाकर तपोदीक्षा में लीन हो जाती है। एकाग्र मन से श्री महाविष्णु के चरण कमलों पर मन रखकर वैराग्य और शुद्ध मन से ध्यान करती है। तब उसे ब्रह्म ज्ञान प्राप्त होता है और वह विष्णु भगवान में लीन हो जाती है। जिस जगह पर वह मुक्ति पाई थी, वह पवित्र जगह सिद्धाश्रम नाम से मशहूर हो गया। जिसको पत्नी के रूप में पाने के लिए कर्दम जैसे ऋषि को दस हजार साल तप करना पडा, जिसे खुद भगवान ने अपने उपदेश सुनने के लायक समझकर उसे सारी सृष्टि रहस्य बता दिया, जिसकी योनि से जन्म लिया, वह महान पतिव्रता है देवहूति। भागवत, पुराण के अंतर्गत कपिल और देवहूति के संवाद को जो भी पढ़ते हैं या सुनते हैं उसकी बुद्धि पवित्र होकर वे भगवान विष्णु के चरण कमलों को प्राप्त करते हैं।

लोकः समस्तः सुखिनो भवंतु।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

श्री श्रीनिवास गोविंदा
श्री वेंकटेश गोविंदा

जनवरी 2024

श्री भक्तवत्सल गोविंदा
श्री भागवतप्रिय गोविंदा

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

श्री नित्यनिर्मला गोविंदा
श्री नीलमेघश्याम गोविंदा

फरवरी 2024

श्री पुराणपुरुषा गोविंदा
श्री पुंडरीकाक्षा गोविंदा

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29		

श्री गोविंदा हरि गोविंदा
श्री गोकुलनंदन गोविंदा

मार्च 2024

श्री नंदनंदना गोविंदा
श्री नवनीतचोर गोविंदा

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

जनवरी 2024

01 नूतन अंग्रेजी वर्ष
07-13 श्री आंडाल नीराट्टोत्सव
10 जनवरी से 02 फरवरी तक तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का सन्निधान में अध्ययनोत्सव
14 भोगी
15 मकर संक्रांति
16 कनुमा, श्री गोदादेवी का परिणयोत्सव
25 श्रीरामकृष्ण तीर्थमुक्कोटी
26 भारत गणतंत्र दिवस

फरवरी 2024

09 श्री पुरंदरदास जी का आराधनोत्सव
10-18 देवुनि कड़पा श्री लक्ष्मीवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
14 वसंतपंचमी
16 रथसप्तमी, भीष्माष्टमी
17-23 तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का प्लवोत्सव
20 भीष्म एकादशी
24 श्री कुमारधारा तीर्थमुक्कोटी
29 फरवरी से 08 मार्च तक श्रीनिवासमंगापुरम् श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

मार्च 2024

01-10 तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
08 महाशिवरात्रि
17-25 तरिगोंडा श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
20-24 तिरुमल श्री बालाजी का प्लवोत्सव
24 होली
25 श्री लक्ष्मीजयंती, श्री तुंबुरु तीर्थमुक्कोटी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

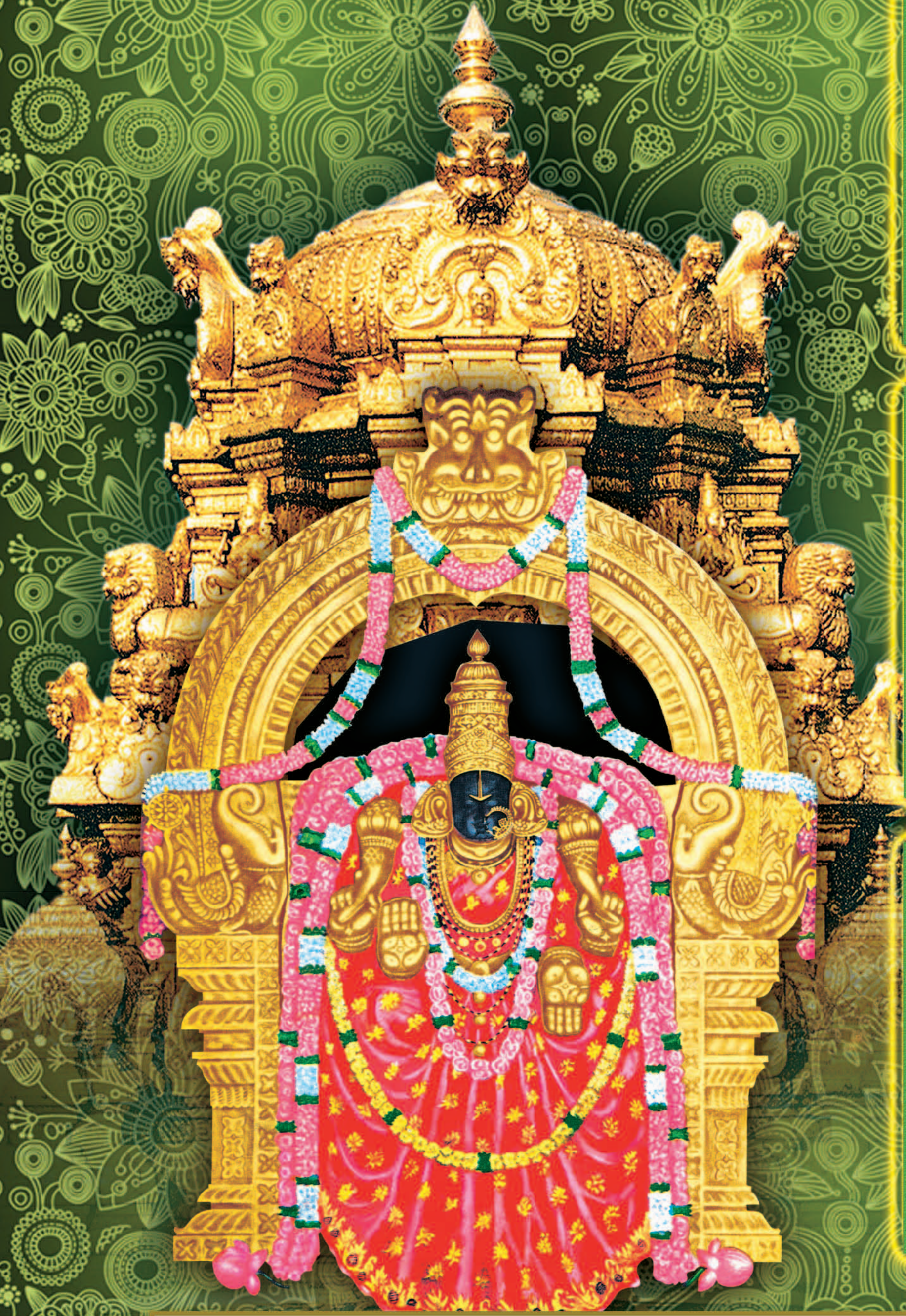

अप्रैल 2024

श्री पशुपालकश्री गोविंदा
श्री पापविमोचन गोविंदा

श्री दुष्टसंहार गोविंदा
श्री दुरितनिवारण गोविंदा

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

मई 2024

श्री शिष्टपरिपालक गोविंदा
श्री कष्टनिवारण गोविंदा

श्री वज्रमकुटधर गोविंदा
श्री वराहमूर्ति गोविंदा

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

जून 2024

श्री गोपीजनलोल गोविंदा
श्री गोवर्द्धनोद्धार गोविंदा

श्री दशरथनंदन गोविंदा
श्री दशमुखमर्दन गोविंदा

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

अप्रैल 2024

05-13 तिरुपति श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
06 अन्नमय्या वर्धंति
09 'श्री क्रोधिनाम' तेलुगु नूतन वर्ष 'उगादि'
11 श्री मत्स्यजयंती
14 डॉ.बी.आर.अंबेडकर जयंती
12-20 वायल्पाडु श्री पट्टाभिरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
17-25 ओंटिमिट्टा श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
17 श्रीरामनवमी
21-23 तिरुमल श्री बालाजी का वसंतोत्सव
23 अप्रैल से 01 मई तक नागुलापुरम् श्री वेदनारायणस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

मई 2024

01 नर्मदा नदि पुष्कर प्रारंभ
10 अक्षयतृतीया, श्री परशुराम जयंती
12 श्री रामानुज जयंती, श्री शंकराचार्य जयंती
14 तिरुपति गंगाजातर(मेला) समाप्त
16-24 तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
17-19 तिरुमल श्री पद्मावती श्रीनिवास का परिणय महोत्सव
20-23 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का वसंतोत्सव
21-29 ऋषिकेश, नारायणवनम् श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
22 श्री नृसिंह जयंती, तरिगोंडा वेंगमांबा जयंती
23 श्री कूर्म जयंती, श्री अन्नमय्या जयंती

जून 2024

01 श्री हनुमज्जयंती
17-21 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का प्लवोत्सव
17-25 अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्नवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
19-21 तिरुमल श्री बालाजी का ज्येष्ठाभिषेक
27-29 तिरुचानूर श्री सुंदरराजस्वामीजी का अवतारोत्सव

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

श्री पक्षिवाहन गोविंदा
श्री पांडवप्रिय गोविंदा

जुलाई 2024

श्री मत्स्यकूर्मा गोविंदा
श्री मधुसूदन हरि गोविंदा

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

श्री वराह नरसिंह गोविंदा
श्री वामन भृगुराम गोविंदा

अगस्त 2024

श्री बलरामानुज गोविंदा
श्री वेणुगानप्रिय गोविंदा

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

श्री सीतानायक गोविंदा
श्री श्रितपरिपालक गोविंदा

सितंबर 2024

श्री अनाथरक्षक गोविंदा
श्री आपद्धांधव गोविंदा

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

जुलाई 2024

10-12 श्रीनिवासमंगापुरम्
श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का साक्षात्कार वैभवोत्सव

16 तिरुमल भगवानजी का आणिवर आस्थान

16-18 तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का ज्येष्ठाभिषेक

21 गुरुपूर्णिमा, व्यासपूर्णिमा

अगस्त 2024

08 नागचतुर्थी

09 गरुडपंचमी

13 मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा वर्धंति

15 भारत स्वतंत्रता दिवस

16 श्री वरलक्ष्मीव्रत

14-17 तिरुमल श्री बालाजी का पवित्रोत्सव

19 श्री हयग्रीव जयंती, राखी, श्री विखनस महामुनि जयंती

20 गायत्रीजपम्

26 श्रीकृष्णाष्टमी

27 गोकुलाष्टमी

सितंबर 2024

05 श्री बलराम जयंती, श्री वराह जयंती

07 श्री गणेश चतुर्थी

08 ऋषिपंचमी

15 श्री वामन जयंती

15-18 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का पवित्रोत्सव

17 श्री अनंतपद्मनाभव्रत

18 महालयपक्ष प्रारंभ

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

अक्तूबर 2024

श्री शरणागतवत्सल गोविंदा
श्री करुणासागर गोविंदा
श्री कामितफलदा गोविंदा
श्री पापविनाशक गोविंदा

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

नवंबर 2024

श्री धरणीनायक गोविंदा
श्री दिनकरतेजा गोविंदा
श्री पद्मावतीप्रिय गोविंदा
श्री प्रसन्नमूर्ति गोविंदा

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

दिसंबर 2024

श्री सालग्रामधर गोविंदा
श्री सहस्रनामा गोविंदा
श्री गरुडवाहन गोविंदा
श्री गजराजरक्षक गोविंदा

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

अक्तूबर 2024

02 गांधी जयंती, महालय अमावास्य
04-12 तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
04-12 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का नवरात्रि उत्सव
08 तिरुमल श्री बालाजी का गरुडवाहन सेवा
09 सरस्वतीपूजा
11 दुर्गाष्टमी
12 विजयदशमी
31 नरक चतुर्दशी, दीपावली

नवंबर 2024

01 श्री केदारगौरीव्रत
05 नागुलचविति
09 तिरुमल श्री बालाजी का पुष्पयाग
13 कैशिकद्वादशी
14 बाल दिवस
28 नवंबर से 06 दिसंबर तक तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का ब्रह्मोत्सव
28 श्री धन्वंतरी जयंती

दिसंबर 2024

02 तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का गजवाहन सेवा
06 पंचमीतीर्थ
07 सुब्रह्मण्य षष्ठी, तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का पुष्पयाग
11 श्री गीताजयंती
12 श्री चक्र तीर्थमुक्कोटी
13 हनुमद् व्रत, तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का कृत्तिका दीपोत्सव
14 श्री दत्तजयंती
15 श्री कपिल तीर्थमुक्कोटी
16 धनुर्मास आरंभ

परशुराम

डॉ.जी सुजाता

भगवान विष्णु के छठे अवतार के रूप में परशुराम का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। इनके अवतार का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी से पाप और बुराइयों का नाश करना।

परशुराम जी के अवतरण युग के पीछे कुछ अलग-अलग मान्यताएँ है। माना जाता है कि परशुराम का जन्म सतयुग और त्रेता के संधिकाल में हुआ था। भगवान राम की तरह परशुराम जी को भी भगवान श्रीहरि विष्णु का अवतार माना जाता है। इन्हे श्रीराम की तरह ही वीरता का प्रतीक माना जाता है। वे जन्म से ही अत्यंत बहादुर, शूरवीर और कर्तव्यनिष्ठ आचरण के थे।

परशुराम का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता महर्षि भृगु के पुत्र महर्षि जमदग्नि और माता रेणुका थी। ऋषि जमदग्नि सप्तऋषि में से एक थे। भगवान परशुराम का जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ था, लेकिन उनका स्वभाव और गुण क्षत्रियों जैसा था।

उनके जन्म के संबंध में प्रचलित पौराणिक कथा के अनुसार महर्षि जमदग्नि ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया था। जिससे प्रसन्न होकर देवराज इन्द्र ने उनकी पत्नी रेणुका को वरदान दिया था। इस वरदान के परिणामस्वरूप ही उनकी पत्नी रेणुका के गर्भ से वैशाख की शुक्ल तृतीया यानी अक्षय तृतीया को, पांचवें पुत्र के रूप में परशुराम का जन्म हुआ। भगवान परशुराम के चार भाई थे - रुक्मवान, सुखेण, वसु, विश्वानस।

महाभारत और विष्णु पुराण के अनुसार परशुराम अपने पितामह महर्षि भृगु द्वारा किये गए नामकरण संस्कार के बाद राम कहलाए परन्तु जब भगवान शिव ने उन्हें अपना परशु नामक अस्त्र प्रदान किया, तो उनका नाम परशुराम हो गया। साथ ही वे महर्षि जमदग्नि का पुत्र होने के कारण जमदग्न्य भी कहलाये जाते हैं। श्री परशुराम भगवान के अन्य नामों में सम्मिलित हैं : भृगुवंशी यानी ऋषि भृगु के वंशज, भृगुपति, भार्गव और रामभद्र।

जन्म स्थान : भगवान परशुराम के जन्म स्थान को लेकर भी कई मान्यताएँ प्रचलन में हैं। जैसे- उनका जन्म वर्तमान बलिया के खैराडीह में हुआ था। एक अन्य किंवदंती यह भी है कि भगवान परशुराम का जन्म मध्यप्रदेश के इंदौर के पास स्थित महू से कुछ ही दूरी पर स्थित जानापाव की पहाड़ी पर हुआ था। एक और मान्यता के अनुसार

छत्तीसगढ़ के सहगुजा जिले में घने जंगलों के बीच स्थित कलचा गाँव में उनका जन्म हुआ था। एक अन्य चौथी मान्यता अनुसार उत्तर प्रदेश में शाहजहांपुर के जलालाबाद में जमदग्नि आश्रम के समीप एक मंदिर है वहाँ उनका जन्म हुआ था।

माता-पिता के लिए समर्पण की कहानी :

वे अपने माता-पिता के प्रति अत्यधिक समर्पित थे। एक बार, उनकी माता रेणुका गंगा नदी के किनारे हवन के लिए जल लाने गई थी। वहाँ पर गंधर्वराज चित्रसेन को अप्सराओं के साथ विहार और मनोरंजन करते देख वे मंत्रमुग्ध हो गईं। इस प्रकार उन्हें आश्रम पहुँचने में बहुत देर हो गई। ऋषि जमदग्नि ने अपनी दिव्य दृष्टि से माता रेणुका के देरी से आने की वजह का पता लगा लिया। देर से आने के लिए देवी रेणुका की अनुचित मनोवृत्ति जान क्रोधवश

ऋषिश्रेष्ठ ने सभी पुत्रों को बुलाया और माता का वध करने का आदेश दे दिया। उनके बाकी के पुत्रों ने माँ के लाडवश पिता की आज्ञा का पालन करने से इनकार कर दिया। जमदग्नि ने सभी पुत्रों को पत्थर बना दिया। जब परशुराम जी की बारी आई तो उन्होंने पिता की आज्ञा का पालन कर माँ का सर धड़ से अलग कर दिया। इस पर ऋषि जमदग्नि अपने पुत्र परशुराम से बहुत प्रसन्न हुए और मनचाहा वर मांगने के लिए कहा।

परशुराम ने अपने पिता से तीन वरदान मांगे जिसमें से पहला वरदान था उनकी माता को जीवित कर दिया जाए। दूसरा वरदान था भाइयों की विचार चेतना नष्ट न हो और तीसरा वरदान था कि उन्हें मरने की स्मृति याद न रहे। ऋषि जमदग्नि अपने पुत्र के कर्तव्यपरायणता से इतने प्रसन्न थे कि उन्होंने उनकी इच्छा पूरी कर पत्नी रेणुका सहित बाकी चारों पुत्रों को जीवित कर दिया। इस प्रकार परशुराम जी ने अपने पिता और माता दोनों के लिए अपने कर्तव्य, प्रेम और समर्पण का पालन किया।

परशुराम की प्रतिज्ञा :

हैहय वंश के राजा सहस्त्रार्जुन या कार्तवीर्यार्जुन ने घोर तपस्या की और भगवान दत्तात्रेय को प्रसन्न कर लिया। भगवान दत्तात्रेय ने उसे एक हजार भुजाएँ और युद्ध में अपराजित होने का वरदान दे दिया। यह वरदान पाकर वह घमंड में चूर हो गया था। इस घमंड के चलते उन्होंने ब्राह्मणों और ऋषि-मुनियों पर अत्याचार करना शुरू कर दिया। ऐसे ही एक बार राजा सहस्त्रार्जुन वन में आखेट करता हुआ अपनी सेना के साथ ऋषि जमदग्नि के आश्रम पहुँचा। वहाँ उसने ऋषि की कामधेनु गाय को देखा तो उसने बलपूर्वक उसे जमदग्नि से छीन ले गया। इस बात का पता जब परशुराम को चला तो उन्होंने सहस्त्रार्जुन को युद्ध के लिए ललकारा और उसकी सभी भुजाओं को अपनी फरसे से काट डाला और उसका वध कर दिया। सहस्त्रार्जुन के पुत्रों ने इसका प्रतिशोध लेने के लिए परशुराम जी की अनुपस्थिति में महर्षि जमदग्नि के आश्रम पर आक्रमण कर दिया और जमदग्नि की हत्या कर दी। फिर यहीं से परशुराम की प्रतिज्ञा की कहानी आरम्भ होती है जब सहस्त्रार्जुन के पुत्रों ने प्रतिशोध की

अग्नि में जलते हुए महर्षि जमदग्नि का वध कर दिया। पिता की हत्या किये जाने के बाद उनकी भी मातृवियोग में चिंता पर सती हो गयी। परशुराम ने अपने पिता के शरीर पर 21 घावों को देखे थे इन घावों को देखते ही उसी क्षण परशुराम ने प्रतिज्ञा ली कि वह इस धरती से समस्त क्षत्रिय वंशों का 21 बार संहार करेंगे। और 21 बार इस पृथ्वी से हैहय वंशीय क्षत्रियों का विनाश कर दिया। उन्होंने लगभग सारी पृथ्वी पर विजय प्राप्त कर ली थी। अंत में उन्होंने पूरा साम्राज्य ऋषि कश्यप को सौंप दिया और स्वयं महेन्द्रगिरि पर्वत पर जाकर घोर तप में लीन हो गए।

परशुराम जी के अस्त्र :

परशुराम जी के गुरु स्वयं महादेव शंकर थे। वे भगवान शंकर के परम भक्त थे और उन्होंने शंकर जी को तप से प्रसन्न कर उनसे शास्त्रों और युद्ध कौशल की शिक्षा प्राप्त की थी। भगवान शिव के द्वारा ही परशुराम जी को इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त है। उनके चिरंजीवी कहलाने का यही कारण है।

परशुराम जी युद्धकला में निपुण थे। उनका मुख्य अस्त्र कुल्हाड़ी माना जाता है, जो उन्हें शिवजी की कठिन तपस्या करके प्राप्त हुआ था। उनके कुल्हाड़ी अस्त्र को परशु या फिर फरसा नाम से भी पुकारते हैं। उनके धनुष कमान का नाम विजय था। ऐसी मान्यता है कि पृथ्वी पर रावण पुत्र इंद्रजीत के अलावा सिर्फ परशुराम जी के पास सबसे शक्तिशाली और अद्‌वितीय अस्त्र परशु।

परशुराम जी के गुरु स्वयं महादेव शंकर थे। वे भगवान शंकर के परम भक्त थे और उन्होंने शंकर जी को तप से प्रसन्न कर उनसे शास्त्रों और युद्ध कौशल की शिक्षा प्राप्त की थी।

सतयुग में जब उन्हें भगवान शिव के दर्शन करने से गणेश जी द्वारा रोका गया तो उन्होंने अपने परशु से गणेश जी के दन्त पर प्रहार कर दिया था तभी से गणेश जी एकदन्त कहलाए।

हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार ऐसे सात देवता हैं जिनको चिरंजीवी का आशिर्वाद प्राप्त है। ये सब किसी न किसी वचन, नियम या शाप से बंधे हुए हैं और ये सभी दिव्य शक्तियों से संपन्न है। इन सबके नाम इस प्रकार हैं - अश्वथामा, दैत्यराज बलि, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, परशुराम और मार्कण्डेय ऋषि। परशुराम को भगवान श्रीकृष्ण ने सप्त कल्पांत तक जीवित रहने का वरदान दिया है। एक और मान्यता के अनुसार भगवान शिव के द्वारा ही परशुराम जी को इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त है। उनके चिरंजीवी कहलाने का यही कारण है। हिन्दुओं के दोनों महान ग्रंथों रामायण और महाभारत में परशुराम जी का वर्णन मिलता है। रामायण और महाभारत दो युगों की पहचान हैं। रामायण त्रेतायुग में और महाभारत द्वापर में हुआ था। पुराणों के अनुसार एक युग लाखों वर्षों का होता है। ऐसे में देखें तो भगवान परशुराम ने न सिर्फ श्रीराम की लीला बल्कि महाभारत युद्ध भी देखा।

जब राम भगवान ने सीता जी के स्वयंवर में पहुँच कर भगवान शंकर का धनुष तोड़ा था, तो उसकी

गर्जना सुन परशुराम जी वहाँ पहुँच गए। उन्होंने अत्यंत क्रोधित होकर श्रीराम को चुनौती दे दी और लक्ष्मण जी के साथ बहुत बहस की। उसके बाद भगवान श्रीराम ने परशुराम जी को अपना सुदर्शन चक्र सौंपा था। वही सुदर्शन चक्र परशुराम जी ने द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण को वापस किया।

परंतु जब उन्हें एहसास हुआ कि श्रीराम और कोई नहीं बल्कि भगवान विष्णु का अवतार हैं, तो उन्होंने स्वयं ही समर्पण कर दिया। उसके पश्चात् वे पुनः महेन्द्रगिरि पर्वत में जाकर तपस्या करने लगे। महाभारत के युद्ध के कई महान योद्धाओं को परशुराम जी ने अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा प्रदान की थी। उन महारथियों में भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य और अंगराज कर्ण थे जिन्होंने महाभारत के युद्‌ध में 17 दिनों तक युद्‌ध की कमान संभाले रखी थी।

कर्ण ने परशुराम भगवान से शिक्षा प्राप्त करने के लिए झूठ का सहारा लिया था। इस बात का पता चलने पर परशुराम जी अत्यधिक क्रोधित हो गए थे। क्रोधवश उन्होंने कर्ण को श्राप दे दिया कि जब कभी भी उन्हें अपनी विद्या कि सबसे ज्यादा जरूरत पड़ेगी तो वो उसे पूरी तरह से भूल जायेंगे।

वहीं दूसरी ओर परशुराम जी का अपने दूसरे शिष्य और महाभारत के महान योद्धा भीष्म के साथ प्रलयंकारी युद्ध हुआ था। इस युद्ध का कारण भीष्म पितामह की आजीवन ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा थी। परशुराम काशी की राजकुमारी अम्बा को न्याय दिलाना चाहते थे। यह युद्ध 23 दिनों तक चला था, परन्तु इसका कोई निर्णय निकला था। अंत में इंद्र सहित सभी देवताओं के अनुरोध

पर युद्ध रोक दिया गया था। मान्यता यह भी है कि भारत में मौजूद अधिकतर ग्राम भगवान परशुराम द्वारा ही बसाये गए हैं। उनका प्रमुख उद्देश्य पृथ्वी पर हिन्दू वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना था।

भले ही ब्राह्मण परिवार से संबंध रखते हो पर वे केवल ब्राह्मण समाज के ही आदर्श नहीं है बल्कि पूरे हिन्दू समाज के आदर्श माने जाते हैं।

परशुराम कुंड :

असम राज्य की उत्तरी-पूर्वी सीमा में जहाँ ब्रह्मपुत्रा नदी भारत में प्रवेश करती है, वहीं परशुराम कुण्ड है, जहाँ तप करके उन्होंने शिवजी से परशु प्राप्त किया था। वहीं पर उसे विसर्जित भी किया। परशुराम कुंड नामक तीर्थस्थान में पाँच कुंड बने हुए हैं। परशुराम ने समस्त क्षत्रियों का संहार करके उन कुंडों की स्थापना की थी तथा अपने पितरों से वर प्राप्त किया था कि क्षत्रिय संहार के पाप से मुक्त हो जायेंगे।

परशुराम मंदिर :

अनंतेश्वर मंदिर, उडुपी का एक प्रसिद्ध मंदिर है जहाँ परशुराम की पूजा लिंगम के रूप में की जाती है।

तिरुवनंतपुरम, केरल के पास तिरुवल्लम में परशुराम का एक मंदिर है।

आंध्र प्रदेश के राजमपेट में अत्तिराला नामक मंदिर परशुराम को समर्पित है।

अरुणाचल प्रदेश के लोहित जिले में एक हिंदू तीर्थस्थल परशुराम कुंड है, जो परशुराम को समर्पित है। हर साल सर्दियों में हजारों तीर्थयात्री इस स्थान पर आते हैं, खासकर मकर संक्रांति के दिन पवित्र कुंड में डुबकी लगाने के लिए, जिसके बारे में मान्यता है कि इससे व्यक्ति के पाप धुल जाते हैं।

माहुरगढ़, महाराष्ट्र के नांदेड़ जिले में शक्ति पीठ मंदिरों में से एक है जहाँ देवी रेणुका का एक प्रसिद्ध मंदिर मौजूद है। माहुरगढ़ का यह मंदिर हमेशा तीर्थयात्रियों से भरा रहता है। वही माहुरगढ़ पर स्थित परशुराम मंदिर में भी लोग दर्शन करने आते हैं।

अन्य स्थान जहाँ परशुराम के मंदिर पाए जाते हैं, वे हैं महाराष्ट्र के रत्नगिरि जिले में चिपलून और कर्नाटक के उडुपी में। कर्नाटक में, तुलुनाडु (तटीय कर्नाटक) के विस्तार में 7 मंदिरों का एक समूह है, जिन्हें परशुराम क्षेत्र के नाम से जाना जाता है, जिनके नाम हैं, कोल्लूर, कोटेश्वर, कुक्के सुब्रह्मण्य, उडुपी, गोकर्ण, अनेगुड्डे (कुंभसी) और शंकरनारायण।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- पानी और बिजली को वृथा न करें।
- अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- चार माडावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर

आंध्रप्रदेश, कडपा जिला, ओंटिमिट्टा प्रांत में विराजित श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर बहुत प्राचीन श्रीराम मंदिर है। इस प्रांत को 'एकशिलानगर' भी कहते हैं। इस मंदिर का निर्माण जांबवंत ने किया। इस आलय से संबंधित दर्शन एवं सेवा का विवरण निम्नांकित हैं।

मंदिर का दर्शन समय

प्रातः 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक भगवान जी को दर्शन कर सकते है।

प्रातः 5.00 बजे से सुबह 7.30 बजे तक दर्शन

सुबह 7.30 बजे से सुबह 8.15 बजे तक प्रथम घण्टानाद

सुबह 8.15 बजे से सुबह 10.30 बजे तक दर्शन

सुबह 10.30 बजे से सुबह 11.15 बजे तक द्वितीय घण्टानाद

सुबह 11.15 बजे से सायं 5.30 बजे तक दर्शन

सायं 5.30 बजे से सायं 6.15 बजे तक तृतीय घण्टानाद

सायं 6.15 बजे से रात 8.45 बजे तक दर्शन

रात 8.45 बजे से रात 9.00 बजे तक एकांतसेवा

भगवान जी का सेवा टिकट विवरण

1) कल्याणोत्सव - रु.1,000/- दो व्यक्ति के लिए, समय सुबह-9.00 बजे को

2) अभिषेक - रु.150/- दो व्यक्ति के लिए, हर शनिवार, समय सुबह-6.00 बजे को

3) स्वर्ण पुष्पार्चन - रु.250/- एक व्यक्ति के लिए, हर रविवार, समय सुबह-8.30 बजे को

सूचना

मंदिर के प्रांगण में स्थित काउण्टरों में (या) ऑनलाइन के माध्यम से भी टिकट प्राप्त कर सकते है। कृपया भेंट हुण्डी में ही डालें।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

तेरिवुत्त ज्ञानम् शेरिय प्पेरादु, वेन्तीविनैयाल्
उरुवत्त ज्ञान त्तुळल्हिन्र वेन्नै, ओरुपोळुदिल्
पोरुवत्त केळुविय नाक्किनिन्नानेन्न पुण्णियनो
तेरिवुत्त कीर्ति, इरामानुज नेन्नुम शीर्मुहिले ॥८२॥

सुप्रसन्नविवेकविरहतः प्रबलदुष्कर्मफलभूतविवेकान्ध्यसीम्नि स्थितं मां क्षणादेव बहुश्रतं कृतवान् सुप्रसिद्धयशाः कालमेघसमौदार्यो भगवान् रामानुजस्सत्यमद्वितीयः स्वलु धार्मिकः।

सुप्रसन्न विवेक से विरहित होकर अतिक्रूर पापों के फलतया कृत्याकृत्यविवेक खोकर दुःख पानेवाले मुझ को एक क्षण भर में अन्यादृश बहुश्रुत (माने बहुत उपदेश सुनकर ज्ञानी बननेवाला) बनानेवाले, सुप्रसिद्ध कीर्तियुत और कालमेघसदृश परमोदार श्री रामानुज स्वामीजी अनुपम परम धार्मिक हैं। (विवरण- सर्वथा पापी व अज्ञानी मुझ को एक क्षण में विलक्षण ज्ञानी बनानेवाले श्री स्वामीजी का यश, औदार्य और धार्मिकत्व दूसरे व्यक्ति में नहीं देखे जा सकते।)

क्रमशः

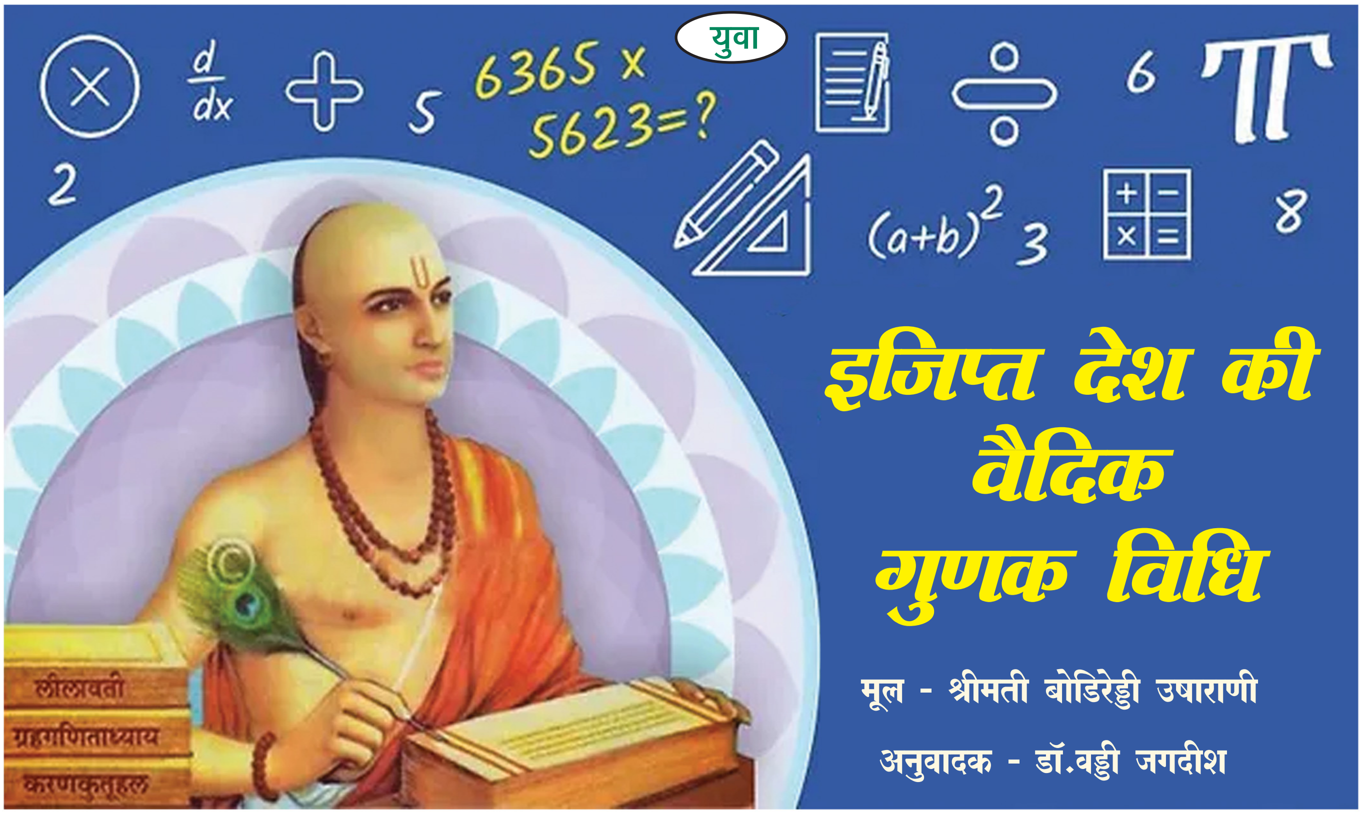

इजिप्त देश की वैदिक गुणक विधि

मूल - श्रीमती बोडिरेड्डी उषाराणी

अनुवादक - डॉ.वड्डी जगदीश

साधारणतः गुणक करने के लिए पहाडाओं को उपयोग करते है। लेकिन इजिप्त देश के लोग बिना किसी गुणक विधि को उपयोग न करके दूसरे अन्य विधि को उपयोग करते हैं। इजिप्त देश मुख्यतः तीन प्रकार के रूप में करते हैं। जैसे किसी भी संख्या 1,2,4,8,16,32,64... ऐसे कई संख्याओं को उन का फल कर सकते हैं। पहला फल के क्रम में इन अंकों को लिखना चाहिए। उन के सामने गुणना करनेवाली संख्या को दोगुना करते हुए लिखना। और जिन अंकों का योग को गुणा किया जाता है, उन का योग अंकों के विपरीत अंकों के योग का फल होता है।

उदा (1) : 35X212 का फल चाहिए तो...

1	212
2	424
4	848
8	1696
16	3392
32	6784

इस प्रकार 35 आने के लिए 1, 2, 32 जोडें। अतः 1, 2, 32 के विपरीत संख्याएँ मिलाने से फल मिलता है।

35X212 = 6784
424
212
7420

उदा (2) : मान लीजिए 21X25 चाहिए तो...

1	25
2	50
4	100
8	200
16	400

21 आने के लिए 1, 4, 16 मिलाना है। अतः उनके विपरीत संख्याओं का योग ही योग होता है।

21X25 = 25+100+400

= 525

इजिप्त देश अपनी विधियों के अनुसार संख्या को दोगुना और आधा करके गुणा कर सकते है। गुणा की जाने वाली संख्या को बाई ओर तथा गुणा की जानेवाली संख्या को दाई ओर लिखें। बाई ओर की संख्या को आधा कर दें और बाकी छोड़ दें। तब तक लिखें जब तक वह न आ जाए, दाई ओर की संख्या न मिल जाए। बायीं ओर के अंक के विपरीत दायीं ओर के अंक को मिलाने से फल प्राप्त होता है।

उदा : मान लीजिए 21X4 फल चाहिए तो

21	42
10	84
5	168
2	336
1	672

बायीं ओर की दाहिनी संख्या 1, 5, 21 अंकों को विपरीत अंकों को मिलाने से 42+168+672=882 होता है। यही संख्याओं का फल होता है।

इजिप्त देश में और एक विधि भी प्रचलित में है। इस विधि में गुणांक की गणना सूचक अंक में उन अंकों को बनाकर करनी चाहिए। बदली गयी संख्याओं की दशम स्थान की संख्या को गुणक की प्रथम संख्या को निचले स्थान पर मानकर सोचना है। तब सभी संख्याओं को प्रथम स्थान के रूप में लाना है। इस के बाद दशम स्थान के लिए निचले दशम स्थान और प्रथम स्थान के लिए निचले स्थान पर रख कर विपरीत अंकों को गुणना करने से आनेवाली संख्या को मिलाने से आनेवाला फल का लब्ध को दशम स्थान के रूप में लिखना चाहिए। इस संख्या को मन में रखना चाहिए। गुणक की प्रथम स्थान पर और दशम स्थान पर निचले लिखकर विपरीत अंकों को गुणना करें। तब मन में जिस संख्या को रखा है उसे इस फल को मिला दीजिए। तब इस दशम स्थान पर लिखिए। अब तो संख्याओं का फल आता है। इस विधि दिमाग को खेलता है।

उदा (1) : 31X23 चाहिए तो...

कागज पर 31 लिखें और 23 को 32 को रूप में लिखिए। पहले 3 को निचले मानकर बाद में 31 के निचले स्थान पर 32 को मानकर, फिर 3 को निचले 2 रूप में मानकर विपरीत अंकों से गुणना करें, तब प्रथम, दशम, शत और हजार स्थान पर लिखिए।

31	31	31
32	32	32
3	11	6

31X23= 713

उदा (2) : मान लीजिए 21X32

21	21	21
23	23	23
2	7	6

अब 21X32 = 672 होता है।

इस प्रकार भारत के अलावा इजिप्त देश में वैदिक गणित प्रचलित में हैं।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

3. तोण्डै नाडु दिव्य क्षेत्र

43) कांचीपुरम वरदराज मंदिर (कांची)

तिरुकच्चि अत्तिगिरि (अत्तियूर, कांचीपुर, सत्यव्रतक्षेत्र) पेरुमाल कोविल। चेंगल पट्-अरक्कोणम् रेल मार्ग से मद्रास कांचीपुरम (चेंगलपट् होकर) रेल मार्ग में कांचीपुरम रेल्वे स्टेशन है। यह मंदिर रेल्वे स्टेशन के लगभग 4 कि.मी. पर है। चिन्न कांचीपुरम (विष्णु कांची है) में सब स्थानों से बस की सुविधा है। यह एक बड़ा शहर है।

मूलमूर्ति - वरदराज पेरुमाल, पेररुळालन, देवाधिराजन।

तायार - पेरुन्देवितायार (अलग सन्निधि) गिरि के प्रवेश द्वार में महादेवी, अलगिय सिंहर की सन्निधि है।

तीर्थ - वेगवती नदी, अनन्त सरस इसके अलावा कई तीर्थ हैं।

विमान - पुण्यकोटि विमान।

प्रत्यक्ष - भृगु, नारद, आदिशेष, ब्रह्म, गजेन्द्र यहाँ कई प्राचीन मंदिर हैं।

विशेष - पोय्है आल्वार, श्री वेदान्त देशिकन का अवतार स्थल है। अत्तिवरदराज की मूर्ति-लकड़ी से निर्मित मंदिर के आगे की पुष्करिणी अनन्त सरस में पानी के अंदर विराजमान हैं।

यह मूर्ति प्राचीन मूलमूर्ति है। हर चालीस वर्ष में उसे पानी के अंदर से बाहर निकालकर 10 दिन दर्शन के लिए मंदिर के एक मंडप में पधारते हैं। और नित्य आराधना सहित कई उत्सव मनाये जाते हैं।

ब्रह्म ने यहाँ यज्ञ का अनुष्ठान किया। इसलिए नगर का नाम कांची एवं भगवान का नाम वरदराज है। याग की पूर्ति के वक्त वरदराज भगवान यागकुंड

से आविर्भूत हुए। ब्रह्माजी की प्रार्थना के अनुसार यहाँ विराजमान होकर दर्शन देते हैं।

स्वयं ऐरावत ने भगवान को वहन किया था। इसलिए हस्तिगिरि (वेदगिरि) भी कहते हैं। जिस पर मंदिर निर्मित है। यहाँ के प्राकार में दो स्वर्ण छिपकलियाँ हैं। यह ऐतिह्य है कि इनको स्पर्श कर दर्शन करने से सभी बीमारियों का निवारण होता हैं। यहाँ पुष्करिणी के किनारे वराह भगवान की सन्निधि है। इसके अलावा आल्वार, आचार्य, वेदान्त देशिकन एवं ताताचार्य की सन्निधियाँ हैं। यहाँ पांचरात्र आगम के अनुसार आराधना होती है।

यह एक बहुत बडा मंदिर है जहाँ कई सन्निधियाँ हैं। यहाँ के सहस्त्र स्तंभ मंड़प कलाकृति के लिए मशहूर है। (ब्रह्म द्वारा अनुष्ठित यज्ञ संबंधी विवरण आगे तिरुवेंकट क्षेत्र विवरण में दिया जाता हैं।)

मंगलाशासन - तीन आल्वार, सात दिव्य पद।

नोट : कांचीपुरम में आल्वार द्वारा मंगलाशासन 14 दिव्य क्षेत्र हैं (मंदिर हैं) क्रमसंख्या 43 से 56 तक। यह प्राचीन काल में ज्ञान विकास का बड़ा केन्द्र रहा है। भारत के सभी भागों से यहाँ अध्ययन करने विद्यार्थी आते थे। (कांचीपुरम का

एक भाग (पश्चिम) शिव कांची के नाम से प्रसिद्ध है) वहाँ कामाक्षी एवं एकांबरेश्वर के मंदिर हैं।

44) तिरुवेहका - (कांचीपुरम)

यह वरदराज मंदिर से लगभग 2 कि.मी. पर है। चिन्न कांचीपुर में यथोक्तकारी नाम से प्रसिद्ध है।

मूलमूर्ति - यथोक्तकारी - वेगासेतु पश्चिमाभिमुखी - भुजंग शयन।

तायार (माताजी) - कोमलवल्लि नाच्चियार।

तीर्थ - पोयूहै पुष्करिणी।

विमान - वेदसार विमान।

प्रत्यक्ष - ब्रह्म, पोयूहै आल्वार, भूतत्ताल्वार, तिरुमळिशै आल्वार, कणिकण्णन्।

विशेष - अपने शिष्य कणिकण्णन् के लिए तिरुमळिशै आल्वार जब कांची से बाहर जाने निकले तब भगवान से अपने साथ

चलने की प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना के अनुसार उनके साथ चले। जब राजा ने अपनी गलती के लिए क्षमा मांगकर, पुनः अपने यहाँ - कांची आने की प्रार्थना की। तब आल्वार, कणिकण्णन् से साथ वापस कांची चले। तब आल्वार ने भगवान की प्रार्थना पूरी की - राजा ने अपनी गलती के लिए क्षमा मांगली है। आज पूर्ववत कांची वापस आकर शेषशायी बने। इसलिए यथोक्तकारी नाम (तमिल में शोण्णवाण्णम् चेय्द पेरुमाळ्)।

पौराणिक विवरण है कि सत्वव्रत क्षेत्रं - (कांची) में जब ब्रह्म ने भगवान के दर्शन प्राप्त करने यज्ञ आरंभ किया, तब उनकी पत्नी ब्रह्म से असन्तुष्ट होकर अपना अंश सरस्वती नदी किनारे रहती थी। बुलाने पर भी नहीं आयी। इनकार कर दिया। ब्रह्म अपनी पत्नी सरस्वती के बिना यज्ञ का अनुष्ठान करने लगे। जब सरस्वती को यह समाचार मालूम हुआ तब ब्रह्म द्वारा अनुष्ठित यज्ञ का भंग करने, सह्याद्रि से निकलकर, वेगवती नदी के रूप से यज्ञ क्षेत्र की ओर प्रचण्ड वेग गति से बहने लगी। तब ब्रह्म और देवताओं की प्रार्थना के अनुसार वेगवती नदी के प्रवाह के बीच, भगवान नारायणन नदी के

प्रवाह को रोकने एक सेतु के रूप में, शेष फण के साथ अपने दाएं हाथ के दाएं के बल पर शयनित हुए।

सरस्वती ने भी समझा कि यज्ञ संरक्षणार्थ अब भगवान स्वयं आगए। तब भगवान की प्रार्थना कर स्तुति करने लगी। भगवान के अनुग्रह एवं आदेश पर सरस्वती अपने निज स्वरूप में ब्रह्म के पास पहुँच गयी। निर्विघ्न रूप से यज्ञ संपन्न हुआ।

यज्ञ के समापन के वक्त परमपवित्र पुण्यकोटि विमान का अग्नि के मध्य आविर्भाव हुआ। विमान में पेरुरलुलाप्पेरुमान भगवान वरदराजन (हस्तिगिरि नाथ) प्रसन्न होकर सब को दर्शन दिये। ब्रह्म की प्रार्थना सुनकर वहीं पर विराजमान होकर सभी भक्तों को दिव्य दर्शन देकर अनुग्रह करते हैं। यहाँ के पोयूहे (पुष्करिणी) में पोयूहे आल्वार (सरोयोगी अवतरित हुए) स्वामी देशिकन की वाणी है कि भगवान सभी क्षेत्र में उपाय है लेकिन अत्तिगिरि(वरदराज मंदिर) में उपेय हैं।

क्रमशः

नवंबर-2023 महीने का क्विज-16 के समाधान

1) श्री पद्मावती देवी, 2) गज वाहन,
3) पंचमीतीर्थ, 4) श्रीकृष्ण,
5) बलि चक्रवर्ति, 6) दीपावली,
7) भगवान विष्णु, 8) क्षीराब्धि द्वादशी,
9) देव और दानव, 10) कार्तिक मास,
11) श्री कपिलेश्वर स्वामी,
12) गंगा, गोदावरी और कृष्ण,
13) अभिमन्यु, 14) पद्मव्यूह, 15) नेपाल.

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चयनित पद्य)

मिथ्याडंबर

ऊरु विड्डुव कुंडु नुत्तम शिवयोगि
पोरि चूचु मदिनि बूर्ण सुखमु
दानि लोनि नक्क दल पेट्ट बोवुने
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।26।।

उत्तम शिवयोगी (साधक) अपना गाँव छोड़ कर (ब्रह्म के अन्वेषणा में) बाहर नहीं जाता है। अपने ही घर में बैठ कर चंचल इंद्रियों के साथ घनघोर युद्ध करता रहता है। अंत को उन्हें वश में लाकर पूर्णा सुख अनुभव करता है। किंतु इधर-उधर भटकने वाला सियार (चंचल चित्तवाला) तत्व की बातें सोचने की भी योग्यता कहीं प्राप्त कर सकेगा?

काली मिर्च के स्वास्थ्य लाभ (मरीच)

- डॉ.सुमा जोषि

काली मिर्च या पेपरकॉर्न किसी के लिए पराया नहीं है। यह उन बहुत कम मसालों में से एक है जो विभिन्न मसालों में सबसे अधिक स्वाद जोडता है। आयुर्वेद में इसे 'मरीच' कहते हैं।

काली, सफेद, हरी या लाल, सभी प्रकार की काली मिर्च गुच्छों में बेलों पर उगती हैं। अधिकांश काली मिर्च की फसलें एशिया में पैदा होती हैं - मुख्यतः भारत और वियतनाम में। काली मिर्च भारत में सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली प्रजाति है। इसका लैटिन नाम है Piper nigrum और इसका कुल का नाम है Piperaceae. काली मिर्च भारत और यूरोप के बीच स्थलीय व्यापार का एक महत्वपूर्ण लेख बन गई और अक्सर विनिमय के माध्यम के रूप में काम करने लगी।

काली मिर्च का पौधा एक लता है और अपनी हवाई जडों के माध्यम से 10 मीट (33 फीट) की ऊँचाई तक पहुँच सकता है। इसकी चौडी चमकदार हरी पत्तियाँ बारी-बारी से व्यवस्थित होती हैं। छोटे फूल घने पतले कांटों में होते हैं जिनमें से प्रत्येक में लग भग 50 फूल होते हैं। फल, जिन्हें कभी-कभी पेपरकॉर्न भी कहा जाता है, व्यास में लगभग 5 मी.मी. (0.2 इञ्च) ड्रूप होते हैं। परिपक्व होने पर वे पीले लाल रंग के हो जाते हैं और उनमें एक ही बीज होता है। उनकी गन्ध मर्मज्ञ और बहुत तीखा होता है। पिसी हुई काली मिर्च में 3 प्रतिशत एक आवश्यक तैल (Essential oils) होता है जिसमें शिमला मिर्च का सुगन्धित स्वाद होता है लेकिन तीखापन नहीं होता है।

रासायनिक संघटन

काली मिर्च में मुख्य अस्थिर स्वाद यौगिक टरपेन हैं और काली मिर्च के तेल में नाइट्रोजन युक्त यौगिक होते हैं। काली मिर्च के प्रमुख गंध हैं 2-और B-पिनीन, मायसीन, 2-फेलैंड्रीन, लिमोनेन, लिनालूल, मिथाइल प्रोपेनल, 2-और 3-मिथाइलब्यूटेनल इत्यादि।

स्वास्थ्य में इसका प्रयोग

1) ऐसा कहा जाता है कि काली मिर्च को हल्दी के साथ मिलाने पर कैंसर से बचाव होता है।

2) काली मिर्च और हल्दी को दूध के रूप में सेवन किया जा सकता है। यह पेय आमतौर पर गम्भीर सर्दी से पीडित व्यक्तियों को दिया जाता है।

3) ऐसा कहा जाता है कि इसमें एंटीऑक्सिडेंट, विटामिन-ए और कैरोटीनॉयड होते हैं जो कैंसर और अन्य घातक बीमारियों को ठीक करने में मदद करते हैं।

4) साथ ही, इसे दैनिक आहार में अवश्य शामिल करना चाहिए क्योंकि यह प्राकृतिक रूप से फिट रहने का सबसे अच्छा तरीका है।

5) काली मिर्च अच्छे पाचन में मदद करती है और जब इसे कच्चा खाया जाता है, तो पेट से हाइड्रोक्लोरिक एसिड निकलता है और प्रोटीन को तोडने में मदद करता है।

6) ऐसा कहा जाता है कि 'मसालों का राजा' (काली मिर्च) त्वचा रञ्जकता (विटिलिगो) को रोकता है। यह स्थिति त्वचा को सफेद दिखने लगती है और इसे सफेद छब्बे भी कहा जाता है।

7) काली मिर्च त्वचा को किसी भी प्रकार के त्वचा रञ्जकता से बचाती है और त्वचा के मूल रंग को बनाए रखने में मदद करती है।

8) छोटी उम्र से ही काली मिर्च का सेवन करने से झुर्रियां और त्वचा संबंधी समस्याएँ दूर हो जाती है। यह समय से पहले उम्र बढ़ने और काले धब्बों को भी रोकता है।

9) यह आश्चर्यजनक मसाला वजन कम करने में मदद करता है और इसे ग्रीन-टी में मिलाकर दिन में दो से तीन बार सेवन किया जा सकता है।

10) **अवसाद का इलाज करता है :** उदास लोगों को कच्ची काली मिर्च चबाने के लिए दिया जा सकता है और इससे व्यक्ति का मूड बदल जाएगा। ऐसा इस तथ्य के कारण होता है कि कच्ची काली मिर्च चबाने से मस्तिष्क में मूड-उत्प्रेरण रसायन निकलते हैं जो दिमाग को हर समय शान्त और सुखदायक रखेंगे। हालाँकि, इसे अधिक मात्रा में नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि इसके परिणाम भी होंगे।

11) काली मिर्च पिपेरिन नामक एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होती है, जो कोशिकाओं को मुक्त कणों से (Free radicals) होनेवाले नुकसान को रोकने में मदद कर सकती है।

12) काली मिर्च में एक सक्रिय यौगिक होता है जो जानवरों में सूजन को कम करता है। फिर भी, यह स्पष्ट नहीं है कि इसका मनुष्यों पर भी वही प्रभाव पडता है या नहीं।

13) जानवरों पर किए गए अध्ययन में काली मिर्च के अर्क से अपक्षयी मस्तिष्क रोगों के लक्षणों में सुधार हुआ है, लेकिन इन परिणामों को सत्यापित करने के लिए मनुष्यों में अध्ययन की आवश्यकता है।

14) काली मिर्च का अर्क रक्त शर्करा नियंत्रण में सुधार कर सकता है, लेकिन अधिक शोध की आवश्यकता है।

15) काली मिर्च ने कोलेस्ट्रॉल कम करने वाले प्रभावों का प्रदर्शन किया है और माना जाता है कि यह संभावित कोलेस्ट्रॉल कम करनेवाले पूरकों के अवशोषण को बढ़ावा देता है।

16) काली मिर्च कैल्शियम और सेलेनियम जैसे आवश्यक पोषक तत्वों के अवशोषण को बढ़ा सकती है, साथ ही कुछ लाभकारी पौधों के योगिकों, जैसे कि ग्रीन-टी और हल्दी में पाए जाते हैं।

17) प्रारम्भिक शोध से पता चलता है कि काली मिर्च आन्त में अच्छे बैक्टीरिया को बढ़ा सकती है।

18) काली मिर्च में हल्की गर्मी और तीखा स्वाद होता है जो इसे लगभग किसी भी व्यंजन में स्वादिष्ट बनाता है।

19) कुछ दातून के मिश्रण में काली मिर्च एक प्रमुख सामग्री रहती है। यह मौखिक संक्रमणों से राहत दिलाती है।

20) पानी में बराबर मात्रा में नमक और काली मिर्च मिलाएँ और इस मिश्रण को अपने मसूडों पर रगडें।

21) दान्त दर्द के लिए लौंग के तेल में काली मिर्च मिलाकर प्रभावित जगह पर लगा सकते हैं।

22) काली मिर्च मस्तिष्क की उम्र बढ़ने में भी देरी कर सकती है और अल्जाइमर को रोकने में मदद कर सकती है। इसने स्ट्रोक (Paralysis) के रोगियों में भी लाभकारी प्रभाव दिखाया है।

23) पुरुषों की प्रजनन क्षमता को बेहतर बनाने में काली मिर्च अहम भूमिका निभाती है। यह शुक्राणुओं की संख्या और उसकी सघनता को भी बढ़ाता है।

24) अध्ययनों से पता चला है कि काली मिर्च के बाष्प को अंदर लेने से धूम्रपान वापसी के लक्षणों को कम किया जा सकता है।

25) यह जोडों के दर्द को कम करने में सहायता करता है।

26) काली मिर्च के नियमित सेवन से कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में प्रभावी परिणाम सामने आए हैं।

अधिक काली मिर्च खाने के सम्भावित नुकसान

1) कुछ दवाओं के साथ नकारात्मक प्रतिक्रिया हो सकती है।

2) यदि बहुत अधिक खायें तो, किसी को अपच, सीने में जलन और अन्य जीर्णसम्बन्ध समस्याओं का अनुभव हो सकता है।

3) गर्भावस्था के दौरान अत्यधिक उपयोग समस्याएँ पैदा कर सकता है।

4) पुरुष प्रजनन सम्बन्धी समस्याएँ हो सकती है।

5) छीकं उत्पत्ति करता है।

6) काली मिर्च में मौजूद पिपेरिन रक्त के थक्के को कम कर सकता है और रक्त के थक्के बनने की गति को धीमा कर सकता है।

अगर कोई संशय है तो वैद्य की सलाह पर प्रयोग करें। कुछ लोगों को अलर्जी है तो त्वचा में लाल चकाते आ सकतें है। इसलिए सम्भालकर प्रयोग करें।

''स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें।''

जनवरी महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - यह माह आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। आप में दूसरों के प्रति आदर सम्मान, लोकोपकारक भावनाओं का उदय होगा। सुख-समृद्धि प्राप्ति, नूतन वस्त्र-भोजन-गृह सम्मान, उपहार की प्राप्ति। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा।

वृषभ राशि - शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम होने के बावजूद मानसिक तनाव से ग्रस्त रहेंगे जिससे वाद-विवाद, आर्थिक गतिरोध की चिंता बढ़ेगी इसलिए मन को शांत रखें। संतान कष्ट, शैक्षणिक कार्यों में क्षति, यत्र तत्र व्यर्थ यात्रा जिससे मन खिन्न रहेगा।

मिथुन राशि - इस मास आप कुछ शारीरिक कष्ट से परेशान होंगे। यह माह आपके लिए कष्टदायक रहेगा। स्वास्थ्य चिंता, हृदय रोग, उच्च-रक्तचाप से ग्रसित रहेंगे इसलिए अपने शरीर के ऊपर ध्यान रखे। विविध परेशानियों के कारण मन खिन्न रहेगा और क्रोध उत्पन्न होगा आर्थिक स्थिति पर ध्यान रखे, छात्रों के लिए प्रतियोगिता क्षेत्र में सामान्य सफलता।

कर्कटक राशि - यह मास आपके लिए मध्यम फलदायक रहेगा। नियमित दिनचर्या बनी रहेगी। आर्थिक संतुलन, परिश्रमानुकूल धनलाभ, सफलता मित्रों के साथ, नौकरी व्यवसाय की स्थिति सामान्य रहेगी। अपनों का सहयोग, छात्रों के लिए सफलता सामान्य रहेगा। कौटुम्बिक तनाव, मानसिक कष्ट, व्यय अधिक-लाभ कम।

सिंह राशि - अपने बन्धु बांधवों का सहयोग-समर्थन, आर्थिक स्थिति मजबूत, गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। सामाजिक कार्यों में प्रगति। छात्रों के लिए प्रतियोगि क्षेत्र में सफलता, निर्माण कार्यों में रुचि, आकास्मिक धनलाभ, व्यापार कार्यों में प्रगति।

कन्या राशि - यह माह आपके लिए सामान्य रहेगा। रक्तविकार, जननेन्द्रिय पीड़ा, मानसिक तनाव जिससे वाद-विवाद से परेशानी, चित्त भ्रमित रहेगा। कौटुम्बिक उलझनों में वृद्धि, श्रमानुकूल सफलता, सहयोगियों से उदासीनता, व्यापार सामान्य रहेगा। अपने सुख समृद्धि के लिए सर्वदा प्रयत्न करते रहे और भगवत भजन, आराधना में लगे रहे।

तुला राशि - यह माह आपके लिए उत्तम पलदायक रहेगा। स्वास्थ्य बाधा रहेगा, सुंदर-सुखद वातावरण, शुभ विचारों का उदय, व्यवस्थित दिनचर्या, आत्म विश्वास में वृद्धि, अभिष्टकार्य सिद्धि। निर्माण कार्यों में रुचि बढ़ेगी। रोजी-रोजगार में सफलता। श्रमानुकूल प्रगति, शक्ति संवर्धन, विशिष्टजनों के संपर्क से लाभ।

वृश्चिक राशि - अपने वाणी व्यवहार पर नियंत्रण रखें नहीं तो व्यवहारिक जीवन में सौमनस्यता। दैनंदिन जीवन में व्यतिक्रम, सामाजिक कार्यों में संलग्नता, आर्थिक संतुलन, नौकरी क्षेत्र वालों के लिए आनंददायक रहेगा। सौर-कुटुम्बिकदायित्व का निवर्हन में कठिनाई, व्यापार क्षेत्रों में असफलता।

धनुष राशि - अपने आप पर अत्यधिक आत्मविश्वास न करें। दैवीय कृपा का लाभ, आरोग्य-सुख प्राप्त, मन विचारों में उग्रता, आर्थिक पक्ष मजबूत, गृह-भूमि, कृषि कार्यों में प्रगति, संवाद से हर्ष, उद्योग-व्यापार में सफलता, कौटुम्बिक सुख, उत्तरार्ध में स्थिति मजबूत होगी।

मकर राशि - यह मास फल अच्छा नहीं रहेगा। अनावश्यक कार्यों उलझनों से परेशानी, निरर्थक व्यय, मानसिक, शारीरिक कष्ट-व्यथा, ऋण ग्रस्तता, कार्यों में गतिरोध, छात्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। उद्योग-व्यापार में सीमित सफलता, तनाव-विवाद, वाहन सुख मिलेगा।

कुंभ राशि - कार्यों में सकारात्मक प्रगति, विरोधियों पर दबाव, नौकरी-व्यवसाय की स्थिति अनुकूल रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी, धनागम, घरेलू सुख की वृद्धि, विशिष्ट लोगों के सम्पर्क होने से लाभ मिलेगी। उत्तरार्ध में मिला-जुला प्रभाव दिखेगा।

मीन राशि - कार्यक्षेत्र की विघ्न-बाधाओं का निवारण, स्वास्थ्य सामान्य, आर्थिक क्षेत्र में सफलता, नौकरी-व्यापार में अनुकूलता, घरेलू सुख की वृद्धि, सामाजिक संलग्नता, शत्रु विजय, उत्तरार्ध में उल्लास पूर्ण वातारण, प्रतियोगी क्षेत्र में सफलता, विद्या-बुद्धि कौशल से विजय प्राप्त।

नीतिकथा

यही है कर्म फल

- श्री के रामनाथन

राजा रत्नसेन बडा प्रतापी और दानशील था। उसकी कीर्ति चारों ओर फैली हुई थी। वह सोचता था कि दान में श्रेष्ठ दान अन्न का दान है। इसलिए वह रोज अपने महल के द्वार पर अन्न का दान करता था। उससे दान पाने के लिए बहुत से लोग दूर-दूर से आया करते थे।

एक बार की बात है। दस ब्राह्मणों का एक दल तीर्थ यात्रा में निकलकर हर गाँव के प्रसिद्ध मंदिर में जाकर भगवान के दर्शन में आनंद का अनुभव करते थे। उनका दल राजा रत्नसेन के राज्य में भी आ पहुँचा। तब उन्होंने सुना कि राजा बडा दानी है और अन्न दान को वह अपने जीवन की महान सेवा मानता है। यह सुनकर वह दल अन्न दान पाने के लिए राजा के द्वार पर आ पहुँचा।

राजा जहाँ अन्न दान कर रहा था वहाँ उसके ऊपर एक गिद्ध साँप को मारकर ऐसे अपने चोंच में पकडकर उडता जा रहा था। तब दुर्भाग्यवश साँप के जहर की एक बूँद अन्न रखे बर्तन में गिर पडी। परंतु इसका पता किसी को नहीं था। राजा ऐसे ही अन्न का दान कर रहा था। उस समय ब्राह्मणों का एक दल भी वहाँ आ पहुँचा उनको भी अन्न का दान किया गया। उस अन्न को खाते ही वे निर्दोषी ब्राह्मण तुरंत मर गये।

चित्रगुप्त ने उन सब के प्राण को लेकर यमपुरी जा पहुँचा। अब वह असमंजस में पड गया कि मृत इन ब्राह्मणों के कर्मफल को किस पर दोषी ठहराना है और किसको दंड दिलाना है। क्योंकि दोष तो गिद्ध का नहीं है। वह अपने स्वभाव के अनुसार साँप को मार लेकर ऊपर जा उडता रहा था। राजा तो बडा धर्मवान है और सबको अन्न दान करना श्रेष्ठ सेवा समझने वाला है। उसको पता नहीं था कि अन्न में जहर मिल गया है। इन कारणों से उन दोनों को दोषी नहीं मान सकते। यह सोचकर अब चित्रगुप्त तो किंकर्तव्य विमूढ सा हो गया कि अब किसको दंड दिया जाय।

वह तुरंत अपने राजा धर्मराज के पास जाकर सारी बातें सुनायी। यमराज ने थोडे समय तक सोचकर कहा, ‘‘हे चित्रगुप्त! तुम इस पर चिंता छोड दो। थोडे ही समय में

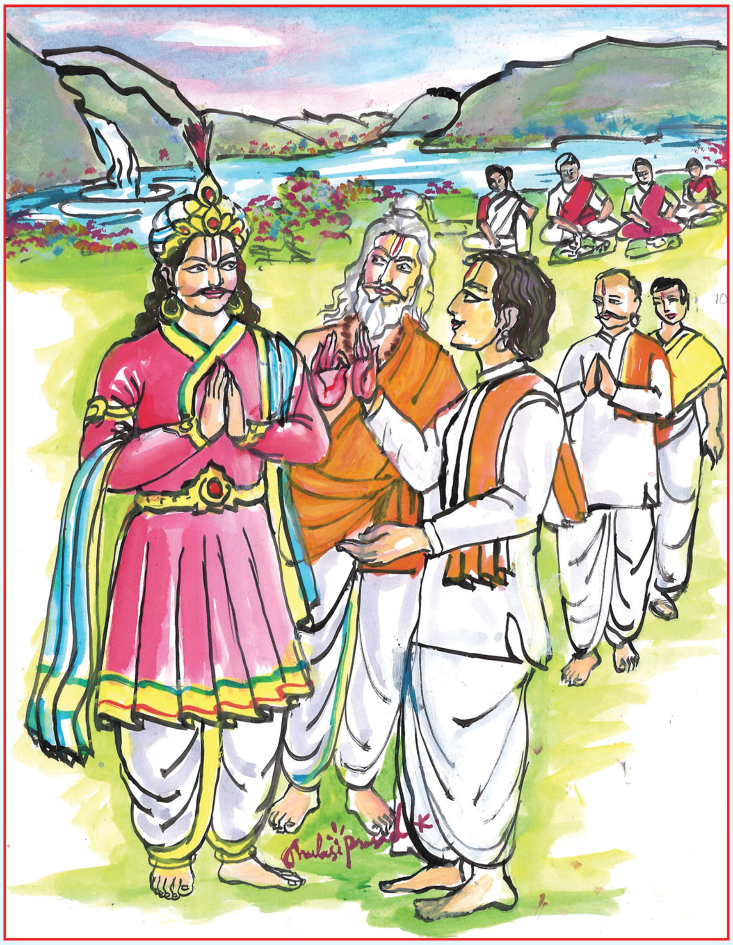

तुमको अपने आप मालूम हो जायेगा कि इस कर्मफल का दंड किसे देना है।'' राजा की बात मानकर चित्रगुप्त चिंता से मुक्त हो गया।

एक दिन चार ब्राह्मणों का एक दल राजा के राज्य में आ पहुँचा। उनको राजा से मिलने की बडी इच्छा थी। पर उनको पता नहीं था कि राजा के महल को पहुँचने के लिए कैसे जाना है। उन्होंने एक खेत के बीच में एक झोंपडी को देखा। उन्होंने सोचा कि वहाँ जाकर पूछने पर ठीक जवाब मिल सकता है। यह सोचकर वे उस झोंपडी में आ पहुँचे। वहाँ एक बूढी औरत भोजन तैयार कर रही थी। उनमें से एक ने बुढिया से महल पहुँचने का रास्ता पूछा। तब बुढिया ने अपनी ऊँगली के इशारे से महल पहुँचने का रास्ता दिखाया। उसके बाद बुढिया ने उन ब्राह्मणों से कहा कि, ''क्या आप सब राजा रत्नसेन से मिलने आये हैं? यदि आप राजा से मिलते हैं तो जरा सावधानी से रहना उत्तम है, क्योंकि यह राजा ब्राह्मणों को मारने की आदत वाला है।'' वे ब्राह्मण यह सुनकर हैरान हो गये।

चित्रगुप्त भी यह सब देखता और सुनता रहा। अब वह गहरी सोच में पड गया। उसके बाद उसने निश्चित किया कि उस कर्मफल का सही दंड इस बुढिया को ही देना है। क्योंकि इसने ही अपरिचित विषय को लेकर बडे अन्याय से सच्चे को अपराधी ठहराती है। इसलिए उसी को दंड देना उचित होगा।

इस कहानी से हम इस सत्य को समझते हैं कि, जो नासमझ होकर भी दूसरे पर कलंक लगाता है वही बडा पापी है। वह अपने ऐसे बूरे कर्म के लिए उचित दंड जरूर पाता है। इसलिए हमें किसी भी विषय की अच्छी जानकारी के बिना दूसरे को अपराधी ठहराना नहीं चाहिए।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति – 517 507. चित्तूर जिला।

चित्रकथा

धनुर्मास का सांप्रदायिक महापर्व

तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.तुलसीप्रसाद

14
बीच में लक्ष्मी माता, गौरी माँ, कन्हैया को रखकर सभी गोपिकाएँ, लडकियाँ धूप, दीप, नैवेद्य और आरती समर्पित कर पूजा करेंगे।
15
फल या गुड नैवेद्य के रूप में रखना चाहिए।
16
धनुर्मास के काल में गोब्बेम्मा (उपलों) को रंगोली में रखकर कन्या, लडकियाँ अपने हाथों से थालियाँ बजाते हुए उसके गोल घूमते हुए गाना गाओ। इस प्रकार करने से खेती बाडी की संपदा वृद्धि होती है। और हम सब सौभाग्य से होंगे।
17
गोब्बिलो, गोब्बिल्लु...
18
कोलनु दोपरिकि गोब्बिलो (स्थानीय लोरियाँ)
19
गोब्बियों(उपलों) को रंगोली में रखेंगे।
20
संध्या समय में गाना गाते हुए गोब्बेम्मा को उपलों के जैसा बनाकर दिवार पर फेंकेंगे।
21
भोगी के दिन(संक्रांति के पहले दिन) इस प्रकार एक महीने से सूखा हुआ उपलियों को चुल्हा में डालकर पोंगल बनाकर सूर्य भगवान को निवेदन करेंगे।
22
गोब्बि माँ को वंदन!
23
बडों का लोकोक्ति है कि भोगी के दिन यह पूजा करें तो भोग-भाग्य प्राप्त होते हैं।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम...
लिंग/आयु............, चंदा नंबर.......................
पता...
....
मोबाइल नं...

क्विज-18

1) अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार संक्रांति पर्व को किस महीने में संपन्न करते है?
ज)..
2) आकाशराज के भाई का नाम क्या है?
ज)..
3) किस ऋषि के आश्रम में पद्मावती श्रीनिवास ने वास किया है?
ज)..
4) अयोध्या में विराजित भगवान जी का नाम क्या है?
ज)..
5) कलियुग में, आनंदनिलय गोपुर के अंदर विराजित भगवान कौन है?
ज)..
6) परशुराम के माता का नाम क्या है?
ज)..
7) परशुराम के पिताजी का नाम क्या है?
ज)..
8) किस ऋषि ने कर्ण को शाप दिया?
ज)..
9) कांचीपुरम् वरदराज पेरुमाल मंदिर के विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)..
10) तिरुवेहका (कांचीपुरम्) मंदिर के माताजी(तायार) का नाम क्या है?
ज)..
11) तिरुवेहका (कांचीपुरम्) मंदिर के विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)..
12) कर्दम प्रजापति का पत्नी का नाम क्या है?
ज)..
13) देवहूति के माता-पिता का नाम क्या है?
ज)..
14) संक्रांति के पहले दिन पर्व को क्या कहते है?
ज)..
15) काली मिर्च का लाटिन नाम क्या है?
ज)..

बालविकास

बिंदी को जोड़िए

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) तिरुत्तणी	अ) बालाजी
2) तिरुपति	आ) कुमारस्वामी
3) कोल्हापुर	इ) विशालाक्षी
4) अयोद्धा	ई) श्री महालक्ष्मी
5) काशी	उ) श्रीराम

1) आ 2) अ 3) ई 4) उ 5) इ

श्रीराम स्तोत्र

श्रीराम राम रामेति
रमे रामे मनोरमे।
सहस्त्र नाम तत्तुल्यं
रामनाम वराननेII

चित्र में अंतर खोजे!

१) पतंग
२) पेड़
३) पक्षी
४) बच्चा
५) हरिदास के सर के ऊपर हुए मटका
६) फूल का पौधा
७) गोबर की गोलियाँ

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
   ....
   पिनकोड ....
   मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
   भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877
दूरभाष :
2264359, 2264543.
संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र
ॐ नमो वेंकटेशाय

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 19-11-2023 को तिरुमल श्री बालाजी मंदिर में अत्यंत वैभवेपेत ढंग से पुष्पयाग महोत्सव को संपन्न किया है।

दि. 19-11-2023 को तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी मंदिर में रंग-बिरंग फूलों से अत्यंत शोभयमान रूप से पुष्पयाग उत्सव को संपन्न किया है।

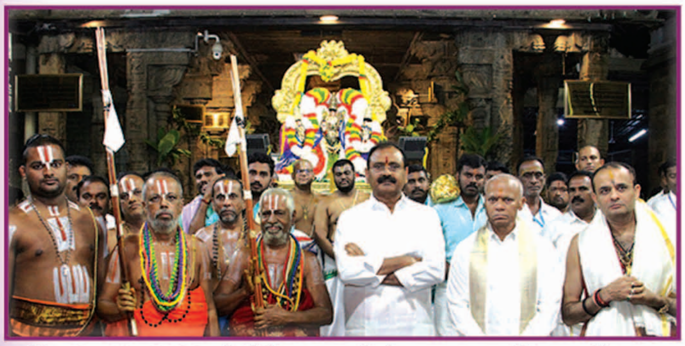

दि. 24-11-2023 को कैशिक द्वादशी के अवसर पर तिरुमल में चार माडावीथियों में श्रीदेवी, भूदेवी सहित श्री उग्रश्रीनिवासमूर्ति ने शोभायात्रा के लिए निकाल कर भक्तों को दर्शन दिया है।

दि. 26-11-2023 को तिरुमल श्री बालाजी मंदिर में कार्तिक दीपोत्सव को सुमनोहर रूप से संपन्न किया है। इस संदर्भ में ति.ति.दे. के श्रीश्रीश्री पेद्द(बडा) जीयर स्वामीजी, ति.ति.दे. के ई.ओ. और आदि अन्य अधिकारीगण ने भाग लिया।

श्री बालाजी का दर्शनार्थ पधारे हुए भारत देश के प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेंद्रमोदी जी को दि. 26-11-2023 को सुस्वागत करते हुए आंध्रप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री वाई.एस.जगन्मोहन रेड्डी जी और आंध्रप्रदेश के राज्यपाल माननीय श्री एस.अब्दुल नजीर जी। दि. 27-11-2023 को दर्शनानंतर माननीय प्रधान मंत्री जी भगवान जी का तीर्थ- प्रसाद को ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष जी से स्वीकारते हुए दृश्य।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-12-2023 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for
India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026"
Posting on 5th of every month.

श्री गोदादेवी के अलंकार में
श्री मलयप्पस्वामी